जन भगत

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान दी जै

* * * * *

जन भगत कदे ना होवे बेघर, घराना वसदा रहे बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता परम पुरख जिन्नां दा वर, अन्तर मिल के दए वडयाईआ। सदा सदा सद नुहाए अगम्मी सर, सरोवर इक्को इक्क वखाईआ। भय भउ चुकावे कूड़ डर, चुरासी गेड़ ना कोई भवाईआ। दीन दुनी विच्चों लए फड़, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। पल्लू नाल शब्दी डोर बंधाए लड़, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। साचे मन्दर अंदर जावे चढ़, गृह वज्जे इक्क वधाईआ। धुर दा ढोला गीत सोहला लए पढ़, सोहँ राग इक्क इल्लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वडयाईआ।

जन भगत कदे ना होवे खानाब्दोश, बेदर ना मात अखवाईआ। जिन्नां दे अन्दर अबिनाशी करता वसदा रहे खामोश, सच सिँघासण आसण डेरा लाईआ। नाम खुमारी अन्दर रक्खे मद्दहोश, प्याला मधर जाम जाण भुलाईआ। जन्म जन्म दी मेटे सोच, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। चरन प्रीती दस्स के मौज, मजलस आपणे संग वखाईआ। पूरब जन्म दी मनसा पूरी कर के लोच, लोचण अन्दरों दए खुल्लाईआ। नाम सुणा के धुर सलोक, सोहँ ढोला इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वडयाईआ।

जन भगत कदे ना होए बेगाना, दूसर वंड ना कोई वंडाइंदा। जिन्नां दा मालक शाह सुल्ताना, शहनशाह दो जहानां सोभा पाइंदा। सो आत्म परमात्म निरगुण धार निरगुण लाए याराना, मुहब्बत मेहर विच्च रखाइंदा। साचे नाम दा सुणाए अगम्मी अफ़साना, अफ़सोस चिन्ता ना कोई रखाइंदा। सच प्रीती अन्दर करे दीवाना, मसती हसती विच्चों प्रगटाइंदा। धुर दा धाम दस्स निशाना, तीर निशाना इक्को इक्क चलाइंदा। जोधा सूरबीर बण मर्द मरदाना, मदद आपणी नाल उठाइंदा। पैहलों लोकमात जन भगतां करे रवाना, पिच्छे आपणा

नूर चमकाइंदा। मेल मिलाए गुण निधाना, गुणवन्ता आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। प्रगट हो के आवे विच्च मैदाना, सच सुहाना वक्त सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

जन भगत कदे ना जावे औझड़ राह, उजड़या खेड़ा ना कदे वखाईआ। जिन्ह़ां दा परम पुरख परमात्म बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। शब्दी शब्द दए सलाह, मशवरा इक्को नाम कराईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमत मैल करे सफाईआ। चरन कँवल दे पनाह, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जीवण विच्चों जीवण दे के नवां, नवां जोबन आपणा दए वखाईआ। मन ममता मेट के तमां, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वास दमां, दामन हो के दामनगीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।

जन भगत कदे ना होवे दूर, दुराडा पन्ध ना कोई वखाईआ। जिन्ह़ां दे अन्तर इक्को नूर, मन्त्र ढोला इक्को गाईआ। सच नाम सरूर, सुरती शब्द विच्च समाईआ। नाता तोड़ कूड़ मफ़रूर, माया ममता मोह चुकाईआ। नित दर्शन करन हाज़र हज़ूर, हज़रत वेखण शहनशाहीआ। जिस दा शुकरीए विच्च सारे करदे मशकूर, मुशकल सभ दी हल कराईआ। सर्ब कला भरपूर, अतोट अतुट्ट रिहा वरताईआ। जन भगतां मानस जन्म कर मनज़ूर, कलिजुग कूड़ फतूर दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे प्रेम भगती वाले मज़दूर, महनत मुशक़त बावक्त सभ दी झोली पाईआ। (२ विसाख श सं २ हरचरन सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत सच धार दी तेरी जुगत, जोगी जुगीशर सिफ्त सालाहीआ। सच दा मार्ग सदा दरुसत, जूठ झूठ कूड़ी क्रिया कम्म किसे ना आईआ। मुहब्बत विच्चों मुहब्बत प्यार विच्चों प्यार लैणा मुफ्त, यार नाल यराना तोड़ लैणा निभाईआ। दीन दुनियां विच्चों रहणा चुस्त, अन्तश्करन आप आपणा वेख वखाईआ। मुड़ के औणा ना पए मात गर्भ उलट, गेड़ गेड़ जन्म रखाईआ। जा के वेखणा आपणा विछड़यां होया मुल्क, जिथ्थे मालक बेपरवाहीआ। जगत वासना विच्च ना जाणा उलझ, ममता मोह ना कोई वधाईआ। मानस जन्म जावे सुलझ, सुल्हाकुल मिल के सही सलामत आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

जन भगत तेरे अन्तर रहे ना चुगली निंदा, सति धर्म इक्क समझाईआ। भेव खुल्ह़ाए दाता गहर गुणी गहिंदा, गवर सबर सवर इक्क आपणा आप जणाईआ। तेरा मूल निरगुण धार दस्से बिन्दा, मात पित दी रक्त बूंद नाता दए तुड़ाईआ। मानस जन्म कर के माटी चरम दी रहे ना चिन्दा, भरम गढ़ ना कोई वखाईआ। अमृत धार रहे सागर सिन्धा, रस

अनरस हो के वस, विश्व आपणा आप समझाईआ। खेल वरवा के जीउ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा आप उठाईआ। नित नवित्त जीवण जुगती भगत भगवान दान देंदा, देह विच्च देह आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक्क दरसाईआ।

जन भगत तेरी मंज़ल इक्क निराली, बिखड़ा राह ना कोई वखाईआ। जिथ्थे जलवा नूर जलाली, रोशन रहम विच्च प्रगटाईआ। तेरा लेखा तत्त वजूद जिस्म नहीं जिस्मानी, निरगुण धार बूझ बुझाईआ। तेरा मालक इक्क असमानी, जो इसम आपणा आपे दए समझाईआ। सो मार्ग दस्से आसानी, असल विच्च वसल विच्च वास्ताा आपणे नाल जुड़ाईआ। सच दवार किरपा धार खावे खवावे इक्क महिमानी, मेहर विच्च रस इक्क चखाईआ। लेखे लाए प्यार दी कुरबानी, कायनात विच्चों काइम मुकाम मुकम्मल दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जन भगत तेरी जगत वासना विच्च होवे ना कदे बदनामी, बदीआं दा बदला आपणी बदौलत आपणी खुशीआं विच्च चुकाईआ। (१० जेठ श सं २ बाज सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत तेरा सच्चा सन्यास, चरन प्रीती हरि जणाईआ। बाहरों लभ्भणा ना पए कोई प्रकाश, घर विच्च घर करे रुशनाईआ। होणा पए ना कदे उदास, खुशी विच्च ना ग़मी कोई वखाईआ। आसा होवे ना कदे बेआस, भगत भगवान जुग चौकड़ी चलदी रहे शाख़, शखसीअत विच्चों असलीअत आप समझाईआ। झगढ़ा रहण ना देवे दस दस मास, मसला मस्ती वाला हल्ल कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो तेरा अभिआस, मन दा मणका बिन मणक्यों दए भवाईआ। मालक उत्ते बिन किरपा होवे ना कदे विश्वास, विशिआं वाला विशा सभ नूं रिहा डुलाईआ। रसना तत्तां वाला जगत सवाद, विस्माद हो के विश्व रंग ना कोई बदलाईआ। बिन भगतां खेड़ा होया ना कदे आबाद, आबादी विच्च वधदी वेखी लोकाईआ। जे सतिगुर सज्जण गिआ जाग, जगह जगह करे रुशनाईआ। हरिजन प्रीती सभ तों वड्डा त्याग, वैराग विच्चों बैराग सीस निवाईआ। हरिजन तेरा झगड़ा नहीं विच्च किसे समाज, समें दा मालक समझ रमज विच्च मिलाईआ। जीउँदिआं जगत सनबंधीआं जवाब, मरन तों पहले आदाब, बाअद विच्च लैणा ना पए ख्वाब, मिल के धुरदरगाही इक्क अहिबाब, गृह साचे डेरा लाईआ। हँस बणना ना पए काग, कन्नां वाला सुणना ना पए राग, रसना वाला चक्खणा ना पए स्वाद, विकारां वाला लभ्भणा ना पए ववाद, सतारां वाला वजौणा ना पए साज, चप्पूआं वाला तक्कणा ना पए जहाज, जिन्नां उप्पर किरपा करे आप महाराज, मारफत विच्चों करके बाहर, नाम सिफ्ती कर के शाहिर, शरीर दी शरअ विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जन भगत तेरा इक्क वैराग, वैरी अन्दरों दए कढ्ढाईआ। दुरमत रहे ना दाग़, द्वैती पन्ध चुकाईआ। दीआ बत्ती रहे ना चराग़, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। तत्ती लग्गे ना अगनी आग, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। सुणनी पए ना कोई आवाज, नाम

शब्द संगीत करे शनवाईआ। सतिजुग सति धर्म चला रवाज, रयाइत विच्च अनाइत विच्च हमाइत विच्च अशाइत विच्च कफाइत विच्च हरिजन पास कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग अनडिठड़े धुर दे आप पुचाईआ। (१० जेठ श सं २ प्रकाश चन्द)

* * * * *

जन भगत अन्तर होवे कदे ना अन्धा, बिन नेत्र नैण नूर जोत रुशनाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया होए कदे ना गंदा, जगत तृष्ना ना कोई सताईआ। सच प्रकाश आत्म ब्रह्म चढ़या रहे चन्दा, ओम सोम दोवें इक्को रंग रंगाईआ। परमानंदा विच्चों लैंदा रहे अनन्दा, निजानंद निझ आनंद सुख सागर रूप समाईआ। धुर दी बन्दगी विच्च बणया रहे बन्दा, बन्दना अन्दर बन्धन सर्ब कटाईआ। साची मंज़ल चढ़े शब्द अगम्मी डण्डा, डण्डावत विच्च इक्को सीस झुकाईआ। काया माटी साची हाटी खुल्ले जिंदा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी जीवण विच्चों जीवण लए बदलाईआ। लेखा जाण गहर गुणी गहिंदा, सागर गहरा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत डगमगाईआ।

गुरमुख अन्ध ना होवे अंधिआर, सति सच सति रुशनाईआ । आत्म आत्म नाल प्यार, परमात्म परमात्म विच्च समाईआ। बेख़बर होवे ख़बरदार, बेकदर कदर्दान नाल मिल के खुशी मनाईआ। जगत गफ्लत विच्चों होवे बाहर, मुशकल विच्चों मुशकल मुसीबत विच्चों मुसीबत ग़मी विच्चों ग़मख़्वार दए गवाईआ। सच दवारे हक़ महिबूब दीदा देवे दीदार, ज़ाहर हो के आपणा रंग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नूर कर रुशनाईआ।

हरि सन्त अन्तर होए ना कदे अन्धेरा, जगत अक्ख लोड़ रहे ना राईआ। इक्को लेखा जाणे तूं मेरा मैं तेरा, हउँ हँ हँ ब्रह्म विच्च समाईआ। आवण जावण चुरासी चुक्के गेड़ा, झेड़ा जून रहे ना राईआ। काया काअबा कुदरत वाला कादर वसावे खेड़ा, काअबा महिराबा इक्क जणाईआ। दरे दरबार नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के मेहर नज़र करे मेहरा, बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जलवा इक्को दए वखाईआ।

गुरसिख अन्तर होवे ना कदे काली रात, अन्ध अन्धेर ना कोई वडयाईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। साचे मण्डल पावे रास, रस्ता बावस्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जगत नैण कोई ना लवे झाक, चार कुण्ट पड़दा ना कोई उठाईआ। जिनूं रमज़ वाली रमज़ इशारे विच्चों जाणी बात, किनारे तों किनारा कर के कादर विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर कर प्रकाश, परकाश्त हो के वेख वखाईआ।

जन भगतां अंदर कदे ना होवे धुंआंधार, ...नज़र कोई ना आईआ। बिन तेल बाती दीपक होए उजिआर, उजाला इक्को दए वखाईआ। मेला मिल के साचे यार, मुहब्बत नाता लए जुड़ाईआ। आत्म आत्म दे आधार, परमात्म परम आत्म साची खुशी वखाईआ। शब्द सार पावे सार, तुरीआ पद पैंडा तुरत मुकाईआ। गुफ़त शनीद कर गुफ़तार, नाद अगम्मी दए वजाईआ। जिस दी समझ ना आई जुग चार, चौकड़ी कूक के दए दुहाईआ। लेखा लिख के गए पैगम्बर गुर अवतार, सेवा कर के कलम शाहीआ। सिफ्तां विच्च कर इज़हार, इबादत विच्च इबादत गए जणाईआ। बिन हरि किरपा काया मन्दर अंदर होया ना कोई पसार, पिसर पिदर सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ।

जन भगतां अन्तर होवे रोशन, जाहर जहूर करे रुशनाईआ। जिस दा समझे कोई ना मोशन, भेव अभेद दए खुल्ाईआ। संसार सागर वेख डूंघा ओशन, इशारे आपणे नाल पार कराईआ। कोटन कोट बुद्धिवान जिस नूं सोचण, मन विद्या कर पढ़ाईआ। उह नज़र ना आया बिन भगतां वाले लोचन, बिन निझ नैण दरस कोई ना पाईआ। खोज खोज थक्के चौदां लोकन, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को इक्क रंग रंगाईआ।

जन भगतां बिनां अक्ख तों खुल्ी रहन्दी अक्ख, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। निरगुण रूप तक्क प्रतक्ख, पारब्रह्म विच्च समाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पैगम्बर पीर भगत सुहेले गौंदे जस, जगत विद्या नाल पढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह मन्दर काया माटी अन्दर रिहा वस, रस्ता रहबर हो के गुरमुखां आप वखाईआ। खुशीआं अन्दर हक़ महिबूब मुहब्बत विच्च पए हस्स, हस्ती विच्च मसती मसती विच्च मतवाला मात्रभूमी खोज खुजाईआ। जोगी जोगीशर तपी तपीश्र रिखी मुनी साधू सन्त फ़कीर सूफ़ी लभ्भण नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण बिन जगत नैण भज्जण वाहो दाहीआ। सो पुरख बिधाता वस्त अमोलक विच्च आपणे हट, नाम भण्डारा निरगुण धारा झोली पाईआ। सति सरूप हो प्रगट, भाग लगाए काया मट, मन्दर मस्जिद शिव दवाला मट्ठ, नज़र कोई ना आईआ। बिन भगतां अन्तर खुल्े किसे ना अक्ख, दीन दुनी नालों होए कदे ना वक्ख, हकीकत विच्चों लभ्भे ना आपणा हक़, परम पुरख उत्ते सारे करदे शक़, शकाइत अन्दर शिकवा, शिकवे अन्दर शंगार मनूआं होए ओदास, मण्डल ना वेखे रास, वस्तू ना लभ्भे पास, बदी विच्च गुस्ताख़, बिन सखी दरस ना पावे कोई साख्यात, धुर दा काहन नज़र किसे ना आईआ। जो बिन नैणां रिहा झाक, लेखा जाणे कायनात, पड़दा लाहे नबातात, दीन दुनी जाणे हालात, जुग चौकड़ी वेखे वाक्यात, भेव खोल्े कलम दवात, आलम उलमा आलमीन यामबीन रहमत रहमान ज़िमी असमान बन्दाए ख़ाकी, ख़ालके ख़लक लेखा जाणे फर्श` फ़लक, बिन दीदे दीद नूरे चशम, रोशने ज़मीर जाहिरा पीर बेनज़ीर, आफताबे महिबूब, लेखा जाणे उच्च अरूज, काया माटी देवे सच सबूत, बिन भगतां अन्तर आईना होवे किसे ना साफ़, दिल दा दिल विच्च नज़र ना आए प्रकाश, खुहाइश

विच्च खुशी खुशी विच्च खसूसीअत, खसूसीअत विच्चों नसीअत, नशरे नाब अनाइत कर झोली ना कोई पाईआ।(१० जेठ श सं २ बीबी राम कौर दे गृह)

जन भगत रक्खे सदा उडीक, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द अन्तर आत्म करदा रहे तारीफ, सिफ्तां नाल साहिब स्वामी सिफ्त सालाहीआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी घर मन्दर अन्दर मिले सज्जण मीत, साहिब सुहेला इक्क अकेला आपणी दया कमाईआ। झगढ़ा मिटा के ऊँच नीच, राओ रंक हस्त कीट शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। धुर दा नाम साचा कलमा दस्स आपणी इक्क हदीस, हज़रत हो के हरि जू करे सच पढ़ाईआ। आसा मनसा पूरी खाहिश करे उम्मीद, आमद खुशामद इक्को घर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साचा गीत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन आत्मक राग अलाईआ। अन्दर बाहर गुप्त जाहर निरगुण सरगुण बण के साचा मीत, मित्र प्यारा एकँकारा आपणे घर वसाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना मन मनसा मेट के लीक, सति सच इक्को दए समझाईआ। सच दवार दा जन भगत बणा के हकीकत विच्चों वसनीक, वास्ताा आपणे नाल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण भगत सुहेला दया कमाईआ।

प्रभ मिलण दी जो जन आस रक्खदा, हिरदे हरि हरि आप धिआईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर निरगुण हो के अन्दर वसदा, जोती जाता पुरख बिधाता निर्मल जोत करे रुशनाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर मार्ग दस्से सच दा, कूड़ी क्रिया हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां जन भगतां पैज रक्खदा, समरथ हो के सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। लक्ख चुरासी झगढ़ा मुकावे आत्म परमात्म आपणा वक्ख दा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच्च समाईआ। नाम निधाना इक्को ढोला दस्से धुर दे जस दा, वेद पुरान शास्त्र समरत अंज़ील कुरान खाणी बाणी नाम वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल करे सदा निझ नेत्र आपणी अक्ख दा, ज्ञान नैण इक्क खुल्ह़ाईआ।

जन भगत उडीक विच्च रक्खे आसा मनसा, मन ही मांहे छुपाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेशवर चरन कँवल देवणहार भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। काया मण्डल अंदर निरगुण निरवैर हो के पावे रासा, सुरत शब्द गोपी काहन खेल खिलाईआ। झगढ़ा मुका के पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर पन्ध दए चुकाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। दर्शन वखाए साख्याता, जोती जोत करे रुशनाईआ। हुक्मे अन्दर मन्न के आखा, आख़र आपणी मंज़ल दए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जोड़ के नाता, धुर दा संग इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्तर रहण ना देवे मनुआ मन उदासा, उत्तम श्रेष्ट आपणा नाम समझाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो रिहा तक्क, तकवा इक्को उप्पर रखवाईआ। परम पुरख परमात्म परवरदिगार देवे हकीकत वाला हक़, वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। शब्द अगम्मी सोई सुरती लावे सट्ट, सिट्टेबाजी कूड़ी दए गवाईआ। सच भण्डारा खोलू के आपणा हट्ट, वस्त अगम्मी इक्क वरताईआ। नाड़ बहत्तर कदे ना उबले रत्त, अप तेज वाए प्रिथवी आकाश पंज तत्त त्रैगुण माया लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच्च सिर ते रक्खे हत्थ, रक्खक हो के रच्छया करे थाउँ थाईंआ।

जन भगत जो उडीक विच्च तक्के राह, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। पुरख अबिनाशी मिले बेपरवाह, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। दो जहानां बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचे नाउँ दी दे के इक्क सलाह, सच्ची सिख्या इक्को इक्क वखाईआ। मेहर नज़र नाल कोट जन्म दे पिछले कट्टे गुनाह, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र आपणी इक्क उठाईआ। सच दवारा एकँकारा मुकामे हक़ सचखण्ड दए वखा, दर दरवाज़ा इक्क खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पड़दा दए चुकाईआ।

जन भगत जो उडीक विच्च रिहा वेख, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। भगत उधारी रिहा वेख, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त बदल देवे रेख, रिखी मुनी समझ कोई ना पाईआ। निरगुण हो के सरगुण आवे देस, साढ़ु तिन्न हत्थ काया मन्दर अन्दर डेरा लाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निरवैर आपणा धारे भेख, भेखाधारी अछल अछल आपणी कार कमाईआ। जिस दा गुण गाइण करन चार वेद, जुग चौकड़ी चार वरन अठारां बरन बख्शणहार सरनाईआ। सो सन्त सुहेला इक्क अकेला जन भगतां अन्दर वड़ के मन्दर चढ़ के खोले आपणा भेत, पड़दा उहला बज़र कपाटी दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो रिहा तरस, तड़फ तड़फ वक्त लंघाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अमृत मेघ देवे बरस, बूंद स्वांती इक्क चवाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेटणहारा हरस, दीन दुनी दी हवस दए गवाईआ। गरीब निमाणयां कोझयां कमलयां प्रेमीआं प्यारयां करे तरस, रहमत विच्चों रहमत रहीम झोली देवे पाईआ। साची मंज़ल चढ़दा जन भगत कोई ना जावे अटक, सुखमन टेडी बंक सिर सके ना कोई उठाईआ। पंज विकारा कोई ना पाए भटक, रिध सिध बैठे मुख छुपाईआ। धुर फ़रमाण नाम संदेशा मिले सख्त, कलमा इक्को इक्क जणाईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगतां मिलण दा आ गिआ वक्त, घड़ी पल थित वार दए गवाहीआ। मिले वड्डिआई लोकमात जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर गुरमुखां कारन आया फ़कत, फिकरयां विच्च फ़ैसला दए कराईआ। जोधा सूरबीर बण के मरदाना मरद, मदद करे थाउँ थाईंआ। दूर दुराडा

नेरन नेरा मन्ने अर्ज़ आरज़ू अन्दर बैठे ध्यान लगाईआ। करे खेल आप असचरज, जगत विद्या समझ कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गरीब निमाणयां वंडे दर्द, दुखीआं दुःख दए गवाईआ।

जन भगत उडीक अंदर जो करे ध्यान, नेत्र नैण अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सच बेनन्ती कर परवान, परवाना धुर दा दए फड़ाईआ। बिन अक्खरां बिन पढ़यां देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्म विद्या अन्दरे अन्दर दए जणाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, निशाना आपणा आपणे नाल रलाईआ। साची मंज़ल दस्स हक़ मुकाम, मुकामे हक़ दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सिर कदे ना करे अहिसान, आसान इक्को रस्ता दए वखाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो रिहा उठ, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। जिन्हां उप्पर जाए तुट्ठ, दीनां अनाथां होए सहाईआ। सति जाम निझर धार देवे घुट, रसना रस ना कोई चखाईआ। पंच विकारा अन्दरों कढ्ढे कुट्ट, काया कुटीआं साफ़ कराईआ। जन भगतां सदा सुहावणी मौले रुत्त, बसन्त खुशी दए वखाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, गुरमुख चात्रक तृखा दए बुझाईआ। भाग लगा के काया माटी बुत्त, बुतखाना आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा उहला रहण ना देवे लुक, राज़ बिनां निमाज़ भेव दए जणाईआ। ... ... जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा जाणे सच मुच, दीरघ रोग दए कटाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो लावे कन्न, कायनात विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। मनसा विच्चों रोक के मन, ममता कूड़ी परे तजाईआ। लालच विच्चों विरोल के , अडोल बह के ढोला गाईआ। भाग लग्गे तिस छप्परी छन्न, साढ्ढे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले श्री भगवन, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत अगम्मी चढ्ढे चन्न, सूरज चन्द जिस नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म पड़दा दए उठाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो होया मस्त, मस्त खुमारी विच्च समाईआ। झगढ़ा मुका के कीट हस्त, हस्ती इक्को वेखे बेपरवाहीआ। जो जमीन तों थल्ले वासा रक्खे उप्पर अर्श, अर्शां दा मालक प्रीतम शहनशाहीआ। सो भगतां जुग जुग मेटणहारा भटक, सन्त सुहेले आपणी गोद उठाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल करे चटक, जगत फुरतीआं विच्च बन्द ना कोई कराईआ। गुरमुखां मिलण आवे सचखण्ड निवासी परत, पतिपरमेशवर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होण ना देवे कोई हर्ज, हर्जाना पिछला पूरब झोली पाईआ। (१० जेठ श सं २ सूबेदार तेज भान दे गृह)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जन भगत आसा विच्च रक्खे कोई ना आलस, कूड़ी निन्दरा अन्दरों बाहर कढ्ढाईआ। साहिब सतिगुर बण के धुर दा सालस, सही सलामत लए उठाईआ। मार्ग दस्स के आपणा इक्क ख़ालस, तन माटी ख़ाकी दए वडयाईआ। सन्त सुहेला बण के धुर दा बालक, पिता पूत गोद उठाईआ। ठांडे दर बणा के याचक, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। मनूआं मन रहे ना नास्तिक, वास्तविक वासा इक्को घर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के माशूक आशक, हरिजन साचे आपणे विच्च टिकाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो मारे झाकी, अन्तर अन्तर पड़दा लाहीआ। साहिब सतिगुर लहणा देणा चुकाए बाकी, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जाम प्याला देवे बण के साकी, अमृत रस इक्क चखाईआ। भाग लगा के काया माटी ख़ाकी, ख़ालश आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत जोती जाता कर प्रकाशी, प्रकाशवान जहूर आपणा दए प्रगटाईआ। मेल मिला के पुरख अबिनाशी, आवण जावण पत्तत्त पावण लेखा दए मुकाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहान सचखण्ड दवार दा बण के साथी, सगला संग आप निभाईआ। मंज़ल औखी रहे कोई ना घाटी, दुष्वारी अग्गे ना कोई अटकाईआ। जन भगत काया मन्दर अन्दर बणया रहे आप सच्चा पाठी, पाठशाला जाण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिने जागदिआं दर्शन देवे सुत्यां राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ।

जन भगत उडीक विच्च जो सुणदा रहे संदेशा, धुर दा हुक्म इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल वड नरेशा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल आपणा भेव जणाईआ। कलिजुग अन्तम निरगुण जोती जाता जामा धार के वेसा, वेसवा रूप वेखे सर्ब लोकाईआ। भगत उधारना जिसदा पेशा, पारब्रह्म आपणा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया कलिजुग अन्तम सदी चौधवीं मुक्के ठेका, ठाकर हो के ठोकर गुरमुखां दए लगाईआ। स्वामी सज्जण मन्नो एका, मालक ख़ालक परवरदिगार सांझा यार जलवागर नूर खुदाईआ। साची मंज़ल चढ़ के तक्को आपणा वतन देसा, जिस विच्चों होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहारा लेखा, लेखे विच्चों लेखा दए बदलाईआ।

जन भगत तेरा लहणा देणा लेखा अख़ीर, आख़र तों आख़र देवे माण वडयाईआ। बिन मुसव्वर तों वखा के आपणी तस्वीर, तजवीज़ आपणी नाल मिलाईआ। जन्म कर्म दी कट भीड़, साचे मार्ग दए वडयाईआ। लक्ख चुरासी भरमण दी रहे कोई ना पीड़, लेखा अगला पिछला दए चुकाईआ। जात पात दीन मज़हब जगत शरअ रहे ना कोई ज़ंजीर, बन्धन कूड़ा दए कटाईआ। जिस मंज़ल चढ़या जुलाहा कबीर, काया कबर विच्चों कढ्ढ के काअबे हक़ दे दए पुचाईआ। जिथ्थे मालक बेनज़ीर, नज़रां तों ओझल बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां प्रेम दे बदले विच्च बदल देवे तकदीर, तकरीर तहरीर विच्च तरां तरां समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पीरन पीर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे घर वसाईआ। (१० जेठ श सं २ राज सिँघ दे गृह)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जन भगतां प्रभ बणे खोजी, खोजत खोजत मेल मिलाईआ। साचा मार्ग दस्से प्रीतम चोजी, काया चोली राह प्रगटाईआ। जन्म कर्म दा रहण ना देवे कोई रोगी, चिन्ता सोग सर्ब गवाईआ। बणन ना देवे जंगलां विच्च फिरन वाला जोगी, जुगत आपणी इक्क दृढ़ाईआ। देवे दरस दरस अमोघी, अंमिउँ रस अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ।

जन भगतां प्रभ जुग जुग लभ्भदा, थान थनंतर वेख वखाईआ। मेल मिलाए आपणे सबब्ब दा, सुबाह शाम वंड ना कोई वंडाईआ। पैंडा मुका के जगत वाली हद्द दा, घर आपणा इक्क वखाईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगदा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सेक लग्गे ना माया अग्ग दा, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। सच प्रेम दा वहण होवे वगदा, सीतल धारा नाल प्रगटाईआ। रूप नज़री आए सूरे सर्बग्ग दा, सर्ब विआपी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले दर ठांडे सदा सद दा, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ।

जन भगतां प्रभ करदा रहे तलाश, चार कुण्ट वेख वखाईआ। समुंद सागर परबत वेखे ख़ास, जंगल जूह पड़दा लाहीआ। पूरब जन्म जिनां बख्शी नाम रास, वस्त धुर दी नाल रखाईआ। उहनां बुझावणहारा प्यास, सांतक सति दए कराईआ। चुरासी विच्चों कर ख़लास, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। चरन दवारे कर वास, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। मेहरवान हो पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ।

जन भगतां प्रभ जुग जुग वेखे, पेख पेख खुशी मनाईआ। जन्म कर्म दे मेटे लेखे, धुर दा लेखा दए समझाईआ। जगत विकार कढ़ु भुलेखे, भरम भरम ना कोई डुलाईआ। पूरब लहणा रक्खे चेते, चेतन्न हो के याद कराईआ। शब्दी धार जिस कारन एथ थे, इस्म चशम चिशम आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी वेख वखाईआ।

जन भगतां प्रभ लभ्भे फिरदा फिरदा, फिरत फिरत आपणा खेल खिलाईआ। सन्त सुहेले साफ़ वेखे हिरदा, हिरदक हारदिक देवणहार वडयाईआ। मेल मिलाए धुरदरगाही पिर दा, प्रीतम हो के प्रेम बंधाईआ। जो भगत सुहेला विछड़यां होवे चिर दा, सहजे सहजे नाता लए जुड़ाईआ। दवारा दस्स के घर थिर दा, महल्ल अट्टल दए वडयाईआ। जिथ्थे अमृत झिरना झिरदा, रस निझर रिहा टपकाईआ। सदा भण्डारा बख्शे मेहर दा, मेहर नज़र पार कराईआ। जगत झल्ल विच्च बुकणा सदा खेल शब्द शेर दा, शाइर सके ना कोई गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चोजी प्रीतम हो के खेल खेलदा, ख़ालक दा मालक आपणी दया कमाईआ। (११ जेठ श सं २ केसर सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत रहे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। दूजे दर ना होवे मंगता, भिखारी बण ना अलख जगाईआ। नाता जुड़ के साची संगता, हरिजन हरि हरि मिल खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी काया चोली रंगदा, कंचन गढ़ इक्क सुहाईआ। जन भगत खेल वखाए सूरे सरबंग दा, साहिब स्वामी दया कमाईआ। पड़दा उठाए निजानंद दा, अमृत झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत सदा दर्शन तक्के निझ नैण, जगत अक्ख ना कोई वडयाईआ। पुरख अबिनाशी मिले धुर दा साक सैण, सज्जण इक्को बेपरवाहीआ। जन्म कर्म दा बणाए लहणा देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। नाम अगम्मड़ा देवे सच रसाइण, धुर दी दात आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत सुहेले सदा कहण, गुरमुख गा गा खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे सति सतिवादी हो के बहण, सच सच विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे इक्क सरनाईआ।

जन भगत प्रभ दा बणे याचक, यथार्थ सेव कमाईआ। अक्खरां दी लोड़ रहे ना वाचक, विद्या विच्च ना कोई चतराईआ। मनुआ मन होवे सांतक, अमृत मेघ साहिब सतिगुर इक्क बरसाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना नास्तिक, वास्तविक नाता इक्को नाल रखवाईआ। जिस दी महिंमा करदे सिमरत शास्त्र, शत्रू अन्दरों दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखे लाए सवार्थ, साह साह आपणा नाम जपाईआ।

जन भगत कदे ना होवे दरवेश, जगत दवारा मंगण कदे ना जाईआ। इक्को मालक मिले नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेश, निरगुण हो के सरगुण खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जन भगतां देंदा रहे नाम संदेश, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जिस दा अक्खरां दा बाहर उपदेश, सिफ्तां तों परे साफ़ दए दृढ़ाईआ। जिस दा कलम शाही लिखे कोई ना लेख, बेअन्त कह के सारे पल्लू गए छुडाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां दस्से वेस, गृह मन्दर डेरा लाईआ। जिस दी लभ्भे किसे ना रेख, रूप रंग ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ।

जन भगत कदे ना होवे निरासा, आसा आसा विच्चों बदलाईआ। पुरख अबिनाशी देवे साथा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां होवे राखा, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। निरगुण नूर जोड़ के नाता, सरगुण मेला सहज सुभाईआ। सचखण्ड दवारे करे वासा, जोती जोत जोत मिलाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। जो शब्दी हुक्म फुरमान मन्नदे आखा, आख़र मंज़ल चढ़ के धुर स्वामी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़री आए साख्याता, साहिब सुलतान पड़दा लाहीआ।

जन भगत दूसर किसे ना होवे मुरीद, मुशर्द मन्नण कोई ना जाईआ। घर स्वामी ठाकर कराए आपणा दीद, दर्शन देवे शहनशाहीआ। जन्म कर्म दी पूरी करे उम्मीद, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां हत्थ रक्खे सीस जगदीश, जगदीशर आपणे लेखे लाईआ। (११ जेठ श सं २ झण्डू राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कदे ना होवे हैरान, परेशानी ना कोई सुणाईआ। मालक मिले इक्क श्री भगवान, दीन दुनी दुःख दलद्र दए गवाईआ। सच वखाए निशान, धर्म दवारे आप प्रगटाईआ। सतिगुर हो के होवे मेहरवान, मेहर नज़र नाल तकाईआ। सच धर्म दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। दरगाह साची बख्शे माण, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाईआ।

जन भगतां अन्दर कदे ना आवे उदासी, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। गल रहे ना जम की फासी, फैसला धुर दा इक्क दृढ़ाईआ। मेल मिलाए सचखण्ड निवासी, निवास अस्थान इक्क वखाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकाशी, दीवा बाती अवर ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां बणौंदा रहे साथी, सखा सुहेला हो के जोड़ जुड़ाईआ ।

जन भगत जग वासना कदे ना होवे दुखी, दलिद्र विच्च कदे ना आईआ। श्री भगवान रक्खणहारा सुखी, सुख आसण आत्म सेज दए बणाईआ। उजल करे मात मुखी, मुख अन्तर दुरमत मैल धवाईआ। सच दवारे आपणी गोदी फिरे चुक्की, चार कुण्ट मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्दी धार आपणे विच्च रक्खे उच्ची, रचना बाहर ना कोई सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सुरत उठावे सुत्ती, आलस निंदरा दए गवाईआ।

जन भगत तक्के ना करे तलाश, लभ्भण बन कोई ना जाईआ। पुरख अकाल काया घर पूरी करे आस, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। साची वस्त नाम देवे रास, रहबर हो के रस्ता दए समझाईआ। निझ घर आत्म रक्खे वास, परमात्म परम पुरख वडयाईआ। अगली पिछली निहकरमी जन्म जन्म दी मेटे वाट, क्रिया कांड अवर ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब विआपी परतापी हो के वसे पास, जापी हो के आपणा नाम जपाईआ। (११ जेठ श सं २ शिव दे गृह)

* * * * *

जन भगत कदे ना मरदा, मर जीवत रूप वटाईआ। मालक बणे साचे घर दा, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। भउ भय विच्च कदे ना डरदा, भयानक रूप ना कोई सताईआ। साची मंज़ल चढ़दा, भज्जे वाहो दाहीआ। इक्को ढोला पढ़दा, तूंही तूंही राग अलाईआ। बिन अक्खां दर्शन करदा, सच दवारे खुशी मनाईआ। सरन सरनाई साची पड़दा, जिथों सके ना कोई उठाईआ। पुरख अकाल अगम्मी लड़ फड़दा, दो जहान ना कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले आप वरदा, वारता पूरब वेख वखाईआ। (११ जेठ श सं २ भोला राम दे गृह)

जन भगत कदे ना आवे विच्च चुरासी, चारे खाणी ना कोई भवाईआ। जुग चौकड़ी मेला मिलदा रहे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। चरन सेवक बणौंदा रहे दासी, दासन दास दए वडयाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण बणया रहे साथी, सरगुण साचा संग वखाईआ। निझ घर साचे मन्दर साढ़ु तिन्न हत्थ रक्खे वासी, निवास अस्थान इक्को इक्क समझाईआ। हरिजन हरि पूरी करे आसी, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के जम की फांसी, फ़ैसला धुर दा इक्क सुणाईआ।

जन भगत चुरासी भोगे मूल ना सज़ा, दस दस मास ना अगन तपाईआ। सदा परम पुरख दी चले विच्च रज़ा, राज़क रिज़क रहीम दए वडयाईआ। आत्म रस दा चक्खे मज़ा, मिज़ाज अवर ना कोई बदलाईआ। सिर ते कूके कोई ना कज़ा, कहर सके ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाण अन्दर देवे सद्दा, शब्दी हुक्मी हुक्म सुणाईआ।

जन भगत दूसर कदे ना तक्के ओट, सहारा अवर ना कोई रखाईआ। आत्म मिल के निर्मल जोत, पारब्रह्म विच्च समाईआ। भाग लगा के काया कोट, गढ़ बंक दए वडयाईआ। झगढ़ा मुका के मुक्ती मोख, मुफ्त प्रभ दे विच्च समाईआ। अग्गे रहे कोई ना सोच, झगड़ा चुक्के कूड़ लुकाईआ। दर्शन पा के नेत्र लोच, अक्ख अन्दरों लए खुल्हाईआ। सच दवारे माणे मौज, मिल मिल ठाकर खुशी बणाईआ। अबिनाशी करता करे चोज, काया चोली रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्को जोग, जुगती आपणा नाम रखाईआ।

जन भगत कदे ना मारे आह, नाअरा हक़ हक़ सुणाईआ। साची मंज़ल चढ़े राह, रहबर वेखे बेपरवाहीआ। विछोड़ा रहे ना कोई जुदा, जुज़ वंड ना कोई वंडाईआ। सिध्धा मानस जन्म विच्च मिले आ, दूजी खाणी ना कोई वखाईआ। घर दीपक होवे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण मेला लए मिला, चेला गुर गुर चेला इक्को रूप वरवाईआ। (११ जेठ श सं २ करमो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत एका ओट रक्खे भगवन्त, दूसर आस ना कोई रखवाईआ। एका नाम जपे मणीआं मन्त, मन वासना बाहर कढ्ढाईआ। देवे वड्डिआई धुर दा कन्त, पारब्रह्म बेपवराहीआ। लेखा चुके विच्चों जीव जन्त, चारे खाणी खण्डर दए वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ।

जन भगत घर सच वसेरा, निहचल धाम मिले वडयाईआ। जिथ्थे झगड़ा रहे ना तेरा मेरा, आत्म परमात्म विच्च समाईआ। सदा वसदा रहे धुर दा खेड़ा, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा, जन्म मरन वंड ना कोई वंडाईआ। पुरख अकाला भगतां बंन्ने बेड़ा, शब्दी डोरी तन्द आप बंधाईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, निरगुण निरवैर निराकार पड़दा दए उठाईआ। चरन कँवल सच सरनाई इक्को गृह कराए वसेरा, बाकी विसरे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा कूड़ अन्धेरा, सच नाम करे रुशनाईआ।

जन भगत कूड़ी क्रिया कदे ना चाढ़े रंग, माया ममता ना मोह हलकाईआ। इक्को साहिब दा रक्खे संग, नाते सगले कूड़ तुड़ाईआ। प्रेम प्यार दा वजौंदा रहे सदा मरदंग, बिन तन्द सतार हिलाईआ। जन भगतां विच्च माणदा रहे अनन्द, निजानंद होए रसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गौंदा रहे छन्द, शमा दीप जोत करे रुशनाईआ। धुर दे हुक्म अंदर रहे पाबन्द, बन्दीखाना कूड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां बेड़ा बन्नू, साचे पतन पार किनार दरगाह साची आप लगाईआ।

जन भगत दूजे दर मंगे कदे ना भिच्छया, झोली जगत ना कोई वरवाईआ। दीन दुनी कूड़ी सृष्टी जाणे मिथ्या, बिन हरि अवर ना कोई सहाईआ। जन भगत सच दवारे सिखे धुर दी सिख्या, जगत विद्या करे ना कोई पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी सति सतिवादी नाम पदार्थ पावे भिच्छया वस्त अमोलक काया गोलक दए टिकाईआ। बिन कलम शाही लेखा जाए लिखवया, रेखा धुर दी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मीता ठांडा सीता, वसणहारा धाम अनडीठा, सच दवारा एकंकारा इक्को इक्क सुहाईआ। (११ जेठ श सं २ बीबी लीला देवी)

* * * * *

जन भगत किसे ना झुकदा, बिन श्री भगवान इष्ट ना कोई मनाईआ। आपणे मार्ग कदे ना रुकदा, दीन दुनी दोवें देवे तजाईआ। सलाह मशवरा किसे कोलों नहीं पुच्छदा, अक्खरां वाली करे ना कोई पढ़ाईआ। चार जुग सदा ढोला गावे इक्को तुक दा, सोहँ राग अलाईआ। जिस नाल आत्म दा पैंडा मुक्कदा, परमात्म विच्च समाईआ। सरूप नज़री आवे सति सुच्च दा, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। पड़दा उहला रहे ना लुक दा, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। ध्यान रक्खे सौंदा उठदा, चवी घंटे इक्को रंग समाईआ। लेखा मुका के जननी कुक्ख दा, कर्मां दा गेड़ा दए कटाईआ। रूप धार के सच सुत दा, पिता पुरख अकाल मनाईआ। मन्दर सुहा के काया बुत्त दा, हुजरा हक़ खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहारा दे के आपणी ओट दा, कोटन कोटां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत मिल इक्क जगदीस, जगजीवण दाते आस रखाईआ। दूसर कदे ना झुके सीस, गल्लीं यार ना कोई मनाईआ। मनूआं झगढ़ा करे ना कोई अबलीस, शरअ शैतान ना कोई लड़ाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, वरन बरन ना वंड वंडाईआ। एको एक रक्खे उडीक, आसा मनसा विच्च समाईआ। जिस नाल लग्गी प्रीत, सो साहिब मिले सच्चा माहीआ। प्रेम प्रीती करे बख्शीश, नाम निधाना झोली पाईआ। सति धर्म दी दस्से रीत, मन्दर मसीत मसला इक्को हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव इक्क समझाईआ।

जन भगत बणे ना किसे दी गोली, मज़दूरी जगत ना कोई कमाईआ। इक्को साहिब स्वामी चरन घोली, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा समझ के बोली, दूजा राग ना कोई अलाईआ। मनुआ मन ना पाए रौली, झगड़ा दिसे ना कोई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वस्त अनमोली, अनमुल झोली इक्को दए भराईआ।

जन भगत दूसर दा ना होवे भिखारी, मंगण कोई ना जाईआ। जिस दा मालक इक्क मुरारी, मोहण माधव शहनशाहीआ। जुग चौकड़ी रहण ना देवे खुआरी, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवार देवे सच्ची सरदारी, सदा दा हुक्म इक्क वरताईआ। ब्रह्म दा बण अधारी, पारब्रह्म आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत किसे ना जावे दर, दरवाज़ा दहलीज़ ना कोई खड़काईआ। भय भउ ना रक्खे डर, निउँ निउँ लागे पाईआ। इक्को पुरख अकाल पकड़े लड़, हो सके ना जुदाईआ। साची मंज़ल जावे चढ़, दर घर साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे वसे नरायण नर, नरां दा मालक धुरदरगाहीआ। सहज सुभाउ किरपा देवे कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख लए वर, वारिस हो के चरन कँवल लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले लए फड़, फड़ बाहों पार किनार संसार आप कराईआ। (१२ जेठ श सं २ कर्म चन्द दे गृह)

* * * * *

जन भगत साची रक्खे श्रद्धा, सदा सदा सद इक्को ध्यान लगाईआ। सचखण्ड दवारे बणे बरदा, अबिनाशी करते अग्गे झोली डाहीआ। झगड़ा मुका के दर दर दा, दरवेश हो के दूजे दर अलख ना कोई जगाईआ। दर्शन पावे इक्को नरायण नर दा, जो घट घट अन्दर डेरा लाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़दा, महल्ल अट्टल बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेले साचे घर, गृह मन्दर इक्क सुहाईआ।

जन भगत आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त गावे इक्को ढोला, आत्म परमात्म राग अलाईआ। रागाँ नादां बाहर जाणे सोहला, सो पुरख आदि निरञ्जण हो के आप पढ़ाईआ। विष्नूं धार रविआ वेखे मौला, मूल मंतर इक्को नज़री आईआ। खेले खेल उप्पर धरनी धरत धवला, लोकमात वधाईआ। जलवागर अलाही नूर अव्वला, एकँकार सच्चा शहनशाहीआ। जो भगतां चढ़ा के साची मज़ला, मंज़ल मंज़ल दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ।

जन भगत किसे दा बणे ना कदे मुहताज, मंगण दूजे दर कदे ना जाईआ। इक्को आसा रक्खे साहिब सतिगुर महाराज, पुरख अकाल ओट तकाईआ। जो देवणहार एथ्थे ओथ्थे दो जहानां धुरदरगाही महाराज, कंगाल शाह आपणे रंग रंगाईआ। नाम धुन सुणावणहारा शब्द धुन अगम्मी आवाज़, धुर संदेशा इक्क अलाहीआ। झगढ़ा चुकाए वुज़ू निमाज़, सिमरन जोग अभिआस साधन इक्को दए दृढ़ाईआ। प्रभ मिलण दी साची इक्को आस, निझ नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणाए दासी दास, दाम्तान पिछली वेख वखाईआ।

जन भगत प्रभ देवणहारा वस्त, नाम अनमुल्लड़ी दौलत आप वरताईआ। झगढ़ा मुका के कीट हस्त, हस्ती विच्चों हस्ती दए बदलाईआ। नाम खुमारी विच्च रक्खे मस्त, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लक्ख चुरासी रहण ना देवे कष्ट, गेड़े विच्च गेड़ा ना कोई भवाईआ। नूर नुराना शाह सुलताना इक्को नज़री आए इष्ट, ईश जीव जगदीश, जगदीशर करे रुशनाईआ। जन भगतां खुल्ह़ी रहे दृष्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा इक्क वडयाईआ।

जन भगत कदे ना मारे धाह, नेत्र नैणां नीर ना कोई वहाईआ। जिन्हां मिल्या परम पुरख बेपरवाह, अन्तरजामी पड़दा उहला दए चुकाईआ। लोकमात बणे सच मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। सचखण्ड दवारे साची दरगाह दए पुचा, राह

विच्च सके ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठा, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ।

जन भगतां प्रभ तारनहारा आप, आप आपणी दया कमाईआ। अन्तर निरंतर मन्त्र दस्से जाप, साचा ढोला आप सुणाईआ। रूह बुत्त तन माटी ख़ाक करे पाक, पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। बज़र कपाटी खोलु के ताक, पड़दा उहला बण विचोला काया चोला आप चुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पृथ्मी आकाश देवे साथ, गगन गगनन्तर नाता लए ना कोई तुड़ाईआ। सच घर सच दवार काया मन्दर अन्दर हो के दास, आत्म सेजा बह बह खुशी मनाईआ। झगढ़ा चुकाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले परबत प्रभास, पारब्रह्म पतिपरमेशवर आपणी दया कमाईआ। सति जोत निरगुण धार नूरो नूर करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा नज़र कोई ना आईआ। लक्ख चुरासी आवण जावण मानस जाति मुक्के वाट, अगला पन्ध अवर ना कोई जणाईआ। सच किनारा दस्से घाट, पतण इक्को रहे सुहाईआ। जिस दवारे बैठा रहे पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी जोत प्रकाशी प्रकाशवान हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे मण्डल रासी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल खोज खुजाईआ।

जन भगत कूड़ी कदे मंगे ना मंग, मांगत हो के झोली कदे ना डाहीआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा संग, सगला संग जणाईआ। आत्म परमात्म देवे निजानंद, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। शब्दी धुन साची धार जणाए सति संग, सति सतिवादी धुर दा डंक वजाईआ। शब्द अगम्मी वजदा रहे मरदंग, तन्द सतार इक्को दए दरसाईआ। भेव खुल्ला के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। भाग लग्गे नाड़ी माटी चम्म, चम्म दृष्टी अन्दरों दए बदलाईआ। चिन्ता रोग सोग रहे कोई ना ग़म, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। लेखे ला के पवण स्वासी दम, दामनगीर हो के पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जन भगत सुहेले लोकमात निरगुण नूर चाढ़ के साचे चन्न, चार वरन अठारां बरन करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के इक्क दूजे नूं कहण धन्न धन्न, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद आपणा हुक्म वरताईआ।

जन भगत एको जपे हरि हरि नां, नाउँ निरँकारा इक्क ध्याईआ। दूसर जाए किसे ना थां, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी मिल मिल देण गवाहीआ। पुरख अकाल इक्को बणा के पिता मां, निरगुण जोत बणे धन्न जणेंदी माईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां पकड़नहारा बांह, बाजू आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शहनशाह, शाही कूड़ी दए मिटाईआ।

जन भगत कलिजुग कूड़ कुड़िआर मेटे शाही, जगत अन्धेर रहण ना पाईआ। अबिनाशी करता श्री भगवान पारब्रह्म पुरख अकाल इक्को नाम पए दुहाई, चार कुण्ट दह

दिशा तोबा तोबा करे लुकाईआ। आत्म परमात्म मन्नणा पए सभ नूं इक्क गुसाईं, इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। कलिजुग जीव चार वरन चार कुण्ट जगत वासना भुल्ले राही, मंज़ल हक़ ना कोई पुचाईआ। अंदर बाहर गुप्त जाहर रो रो सारे देण दुहाई, दोहरा हक़ ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले सज्जण मीत घर साचे लए चढ़ाईआ।

जन भगत सुहेला धुर दा मित्र, श्री भगवान वेख वखाइंदा। जो निरगुण धारों आया निक्कल, सरगुण अंदर सोभा पाइंदा। जिस दा घड़े कोई ना चित्र, रूप अवर ना कोई समझाइंदा। सो जन भगतां अन्दर कदे ना जावे विस्सर, विछड़े आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आपणे विच्च रंगाइंदा। (१२ जेठ श सं २ सेवा सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत सद जन्म सुहञ्जणा, चुरासी विच्चों फासी जाए कटाईआ। मिले मेल आदि पुरख निरञ्जणा, सरगुण नाता जुड़े सहज सुभाईआ। नेत्र मिले ज्ञान साचा अंजना, अन्धेरा अन्ध अन्ध अन्दरों दए गवाईआ। चरन कँवल सच सरनाई देवे मज़ना, मजाजी हकीकी इशक जिस नूं दोवें सीस निवाईआ। सति सति दस्से अगम्मी बन्दना, जो बन्दगी बन्द बन्द लेखा दए मुकाईआ। रस रसाइण वखाए परमानंदना, जो ब्रह्म तों परे पारब्रह्म विच्च समाईआ। जल्वा दिसे इक्को नूरी चन्दना, चन्द तों परे जिस दी सति जोत रुशनाईआ। गृह मन्दर धुर दवार दे लँघणा, मंज़ल विच्च कंडा रहे ना राईआ। घर वखाए साचा अंगना, जगत दवारी हद्द डेरा ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा बेड़ा बंनूणा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

जन भगत आसा विच्च रक्खे रुची, रचना प्रभ दी वेख वखाईआ। धार मिले उच्ची, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। आत्म होवे सुच्ची, मनूआं मैल ना लावे राईआ। सुहञ्जणी होवे रुत्ती, फुलवाड़ी आप महकाईआ। भाग लग्गे काया बुत्ती, बुत्तखाने वज्जदी रहे वधाईआ। सुरत सवाणी उठे सुत्ती, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। साचे मार्ग रहे ना घुस्सी, घुंमणघेर ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा गंढुणहारा टुट्टी, टुकड़िआं वाली वंड ना कोई कराईआ।

जन भगत नाता कदे ना टुट्टदा, डोरी गंढु ना कोई कटाईआ। धुर दा रिश्ता कदे ना छुट्टदा, छुट्टे सर्ब लोकाईआ। साचा सोमा इक्को फुट्टदा, अमृत धारा दए वहाईआ। भंडारा मिले सच सुच्च दा, जूठ झूठ पन्ध मुकाईआ। वेला सोहवे साची रुत्त दा, घड़ी पल सोभा पाईआ। चुरासी लेखा जावे मुक्कदा, मुकम्मल आपणे विच्च मिलाईआ। माण सुहञ्जणी इक्को तुक दा, तुरत लहणा दए मिटाईआ। सचखण्ड दवारा देवे सुख दा, सुख आसण

आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म नाता जोड़ के पिता पुत दा, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। (१२ जेठ श सं २ प्रीतम सिँघ दे घर)

* * * * *

जन भगत याद रक्खे इक्क, एकंकार ध्यान लगाईआ। जो साचा लेखा देवे लिख, पूरब लहणा झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया अन्ध कढ़ु के विख, अमृत जाम दए प्याईआ। सच प्रेम दा दस्से हित, नवित्त आपणा रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट पए दिस, हर घट बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वसाईआ।

जन भगत साचे घर करे वसेरा, सचखण्ड दवारे डेरा लाईआ। जिथ्थे झगढ़ा होवे ना मेरा तेरा, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। वक्त होवे ना संझ सवेरा, रुतड़ी रुत्त ना कोई बदलाईआ। किशना शुक्ला होए ना चन्द अन्धेरा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। भव सागर डुब्बे कोई ना बेड़ा, शौह दरिया ना कोई रुढ़ाईआ। वसदा उजड़े कदे ना खेड़ा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। पुरख अबिनाशी करनहारा इक्को हक़ नबेड़ा, हकीकत दा मालक दया कमाईआ। जन भगत उधारे कर के मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। नज़री आवे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भगतां मुका के लक्ख चुरासी गेड़ा, चारे खाणी ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर लावे डेरा, मन्दर इक्को इक्क सुहाईआ।

जन भगत कदे ना करे सोग, चिन्ता ग़म विच्च ध्यान ना कोई लगाईआ। हउमे हंगता रहे ना रोग, मनुआ मन ना कोई भटकाईआ। आत्म परमात्म ना होए विजोग, विछोड़े वाला पैंडा दए मुकाईआ। पुरख अकाल दी बैठा रहे गोद, सच सिँघासण सोभा पाईआ। साचे नाम दी चुगदा रहे चोग, चुग्गली निन्दया नेड़ कोई ना आईआ। चरन प्रीती करदा रहे जोग, तन माटी कण्पड़ रंग ना कोई बदलाईआ। आत्म सेजा साचा भोगदा रहे भोग, रसीआ रस दए वखाईआ। झगढ़ा मुक्के लोक परलोक, दो जहान मिले वडयाईआ। साचे नाम दा गा के सलोक, शोक अंदरों दए तजाईआ। झगढ़ा मुक्के लाड़ी मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच दवारे जाए पहुंच, जिस घर वस्से शहनशाहीआ। जन भगत सच्चे मार्ग चलदिआं कोई ना सके रोक, रोकड़ वही खाता चित्रगुप्त ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे प्रेम प्यार विच्च आपणी मौज, महिबूब हो के आपणी खुशी वखाईआ। (१२ जेठ श सं २ रणीआ राम दे घर)

* * * * *

जन भगत कदे ना कट्टे तंगी, तंगदस्त ना कोई अखवाईआ। नाम वस्त मिले अनमंगी, साहिब सतिगुर झोली पाईआ। काया चोली जाए रंगी, दुरमत मैल रहे ला राईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोई पाबन्दी, बन्धन जगत कोई ना पाईआ। कूड़ी वासना अंदरों निकले गन्दी, सच सुगन्धी दए भराईआ। पवण स्वासी आवे ठंडी, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। सुरत सवाणी होवे ना रंडी, मिल हरि कन्त वज्जे वधाईआ। राह रहे ना ओझड़ डण्डी, मार्ग इक्को इक्क समझाईआ। मनुआ भेख ना करे पाखण्डी, पड़दा उहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक बण के संगी, सगला संग निभाईआ।

जन भगत कदे ना जाए सौं, आलस निंदरा गफ्लत ना कोई रखाईआ। इक्को एक एका जाए हो, एकँकार विच्च समाईआ। अन्तर अन्तर सदा रहे लोअ, प्रकाश प्रकाश बेपरवाहीआ। जगत नाता तुट्टे मोह, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया देवे खोह, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। भेव चुका के सोहँ सो, सति सति विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत कदे ना फिरे किसे दे गिरदे, चक्कर जगत ना कोई लगाईआ। इक्को श्री भगवान वसावे हिरदे, हरि मन्दर काया लए बणाईआ। मेले होवण विछड़े चिर दे, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। दरवाज़े खुल्लण घर थिर दे, थिर घर साचे विच्च समाईआ। दर्शन होवण अगम्मी पिर दे, पतिपरमेशवर नज़री आईआ। झगढ़े मुक्क जाण धड़ सीस सिर दे, सर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लहणे देवे देर दे, पूरब जन्मां वेख वखाईआ।

जन भगत जगत वासना विच्च ना लावे चक्कर, चक्रव्रतीआं पल्लू जाए छुडाईआ। इक्को प्रेम विच्च बह के फ़क्कर, फ़िकरा धुर दा ढोला गाईआ। चोटी मंज़ल चाढ़े सिखर, सिख्या इक्को इक्क लए अपणाईआ। बिन अबिनाशी करते दूजा करे कोई ना ज़िकर, जगत वाली ना कोई पढ़ाईआ। श्री भगवान बणा के आपणा मित्र, मित्र मुरारा लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा साचा वर, साची धारों काया मन्दर अंदरों आवे निक्कल, पड़दा उहला बण विचोला काया चोला सहजे दए चुकाईआ। (१२ जेठ श सं २ रणीआ राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत प्रभ दी रक्खे सदा याद, जगत वासना विच्च विसर कदे ना जाईआ। अंदरे अंदर प्रेम प्यार दी मारदा रहे आवाज़, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जुग जुग सुणनहारा फरयाद, सचखण्ड निवासी वेखे थाउँ थाईंआ। नाम भंडारा वस्त अमोलक देवे दात, काया झोली आप भराईआ। पड़दा उहला लाह के अंदर

खोल्ह दए राज़, अन्ध अन्धेर देवे मिटाईआ। झगढ़ा मुका के कूड़ समाज, समग्री इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुरमत मैल धो दाग़, पत्तत्त पुनीत दए बणाईआ।

जन भगत प्रभ दी रक्खे सदा लोड़, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। करे बेनन्ती दोए जोड़, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी जाए बौहड़, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। मनूआं रहण ना देवे कठोर, हिरदे हरि हरि जाए समाईआ। झगढ़ा मुकाए पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हलकाईआ। सुरती शब्दी बन्ने साची डोर, तन्द आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया देवे होड़, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत माया ममता कोई ना करे खाहिश, कूड़ी ख़सलत विच्च कदे ना आईआ। जपदा रहे स्वास स्वास, साह साह मिले वडयाईआ। पुरख अबिनाशी सद वसणहारा पास, घर विच्च घर पड़दा दए उठाईआ। जन भगत तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दोहां दी इक्को जात, रूप रंग ना कोई वंडाईआ। तेरा मेला दवारे साच, सच वज्जे इक्क वधाईआ। मनुआ मन ना होए उदास, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। जन्म कर्म दी पूरी होवे आस, भरम भरम दा डेरा ढाहीआ। कूड़ विकारा होवे नास, सच सच दए उपजाईआ। घर स्वामी वसे पास, काया मन्दर होए रुशनाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जन भगतां आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा साथ, सगला संगी आप बण जाईआ।

जन भगत सदा राह रिहा तक्क, तकवा इक्को उप्पर रखाईआ । बिन नैण तों खुल्ली रक्खे अक्ख, लोचण तीजा इक्क खुल्लाईआ। पुरख अबिनाशी हिरदे जाए वस, हरिजन हरि हरि आपणी बणत बणाईआ। नाम अणयाला तीर मारे कस, तिक्खी मुक्खी धार बणाईआ । जगत विकारा सत्थर जाए लथ्थ, सोई सुरती आप उठाईआ। नाउँ भंडारा दे के धुर दी वथ्थ, वक्खर अक्खर दए वखाईआ । जिथ्थे आत्म परमात्म मिल के रिहा वस, जात पात वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को दीपक जोत रिहा जग, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत मार्ग रस्ता दस्से इक्को सच, सति सतिवाद दया कमाईआ।

जन भगत जगत वाली जाणे कोई ना जुगती, जीवण विच्चों जीवण लए बदलाईआ। परम पुरख परमात्म नाल मेले सिध्धी सुरती, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। अबिनाशी करता किरपा करे अकाल मूरती, मोह मुहब्बत कूड़ी दए मुकाईआ। नाद सुणावे अगम्मी तूरती, तुरीआ पद करे रुशनाईआ। धार रहे ना गढ़ हँकार ग़रूर दी, गुरबत अंदरों दए कढ्ढाईआ। नाम खुमारी देवे आपणे सरूर दी, मस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाईआ। खेल खिलाए हाज़र हज़ूर दी, हरिजन साचे लए तराईआ। मिहनत मुशक़त झोली पाए गुरमुख मज़दूर दी, जो

सदा इक्को नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मंज़ल कट्टे दूर दी, नेरन नेरा घर वसेरा गृह मन्दर डेरा घट स्वामी नज़री आईआ । (१२ जेठ श सं २ बीबी चन्नो देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत मंगे एका धूड़, मस्तक मसती नाम रमाईआ। झगढ़ा छड्डे क्रिया कूड़, सति सच सुच्च इक्को लए परनाईआ। चतर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़, बुद्ध बिबेक नज़री आईआ। जलवा जोती मिले नूर, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। मन वासना मनुआ ना पावे फतूर, मत मतवाली ना कोई कुरलाईआ। गढ़ हउमे तुट्टे गरूर, नौबत अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। करे ना कोई कसूर, कसम खा के प्रभ दा ढोला गाईआ। सच दवारे बण मज़दूर, चाकर हो के सेव कमाईआ। नाम खुमारी विच्च हो मख़मूर, महिफल वेखे धुर दी चाईं चाईंआ। दरगाह साची दा हज कर कबूल, काबिआं विच्चों पल्ला लए छुडाईआ। जिथ्थे मिले इक्को महिबूब, मुहब्बत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा चार जुग दिन्दे गए सबूत, साबत सूरत दए वखाईआ। भाग लगाए पंज तत्त काया कलबूत, वजूद इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरवाज़ा दए खुल्हाईआ।

जन भगत दर दरवाज़ा अंदरों लए खोल्ह, बाहर पड़दा ना कोई जणाईआ। निरगुण हो के निरगुण नाल लए बोल, शब्द अगम्मी धुन सुणे चाईं चाईंआ। आत्म हो के परमात्म वसे कोल, कायल हो के आपणा आप मिटाईआ। लोकमात सुत्यां विच्च रहे ना कोई अनभोल, सलाह मशवरा वंड ना कोई वंडाईआ। सिध्धा मार्ग परम पुरख दा वेखे इक्क अनरोल, अनमोल धुर दा नज़री आईआ। सति सच विच्च जाए मौल, मौला मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्डिआई उप्पर धौल, धरनी धरत धवल खेल दए वखाईआ।

जन भगत दूसर करे ना कदे सजदा, नमस्ते विच्च सीस ना कदे झुकाईआ। इक्को परम पुरख दा बणे बरदा, बन्दीखाने विच्चों आपणा आप बाहर कढ्ढाईआ। मेला मंगे इक्को हरि दा, हर हिरदे अंदर वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण गेड़ा गिड़दा, लक्ख चुरासी रिहा भवाईआ। जन भगतां नाल भगवन्त हो के आपे निबड़दा, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वखाईआ।

जन भगत होवे ना कदे ग़दागर, ग़द्दारी विच्च डेरा ना कोई लगाईआ। इक्को मंग धुर दर, दर दरबारे मंग मंगाईआ। मालक मिले सच्चा हरि, महिबूब हो मुहब्बत विच्च समाईआ। मंज़ल मंज़ल आपणी जाए चढ़, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। बिना कलमे तों कलमा जाए पढ़, नाम निधाना सोहला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी सति सतिवादी लए बणाईआ।

जन भगत मस्ती अंदर होए मतवाला, मुतलाशी अवर नज़र कोई ना आईआ। पुरख अबिनाशी होए रखवाला, रक्खया करे थाउँ थाईंआ। नाम खुमारी अंदर करे दीवाना, दीवा बाती निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सच वखाए इक्को महिखाना, महिबूब हो के मेहर नज़र उठाईआ। लेखा जाणे आवण जाणा, आवत जावत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर साचा घर वसे उच्च महल्ल अटल टिकाणा, महिराब हुजरा हक़ इक्क समझाईआ।

जन भगत दूसर होए ना खिदमतगार, खादम हो के सेव ना कोई कमाईआ। इक्को दरस मंगे दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। इक्को मेला परवरदिगार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा लहणा देणा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आप हंढाईआ। नित्त नवित्त प्रगट होए विच्च संसार, दीन दुनी वेखे चाईं चाईंआ। भगत सुहेले लए उठाल, काया मन्दर अंदर सोई सुरती रहण कोई ना पाईआ। कर किरपा बणावे आपणे लाल, लालन आपणे रंग दए रंगाईआ। सचखण्ड वखा के सच्ची धुर दी धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक्क बणाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, सक्कया नालों नाता जाए तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों होए बहाल, जम की फांसी गल ना कोई पाईआ। मेल मिले दीन दयाल, दीनां बंधू बंधन दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दा मुशकल हल्ल करे सवाल, अहिवाल आपणा इक्क समझाईआ। (१३ जेठ श सं २ देवी सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कूड़ी रक्खे कोई ना हरस, ममता मन ना कोई धराईआ। इक्को प्रभ दा निझ लोचन मंगे दरस, जगत अक्ख ना कोई वडयाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर रहे भटक, भटकणा बाहरों सर्ब चुकाईआ। अबिनाशी करता करे सदा तरस, मेहरवान मेहर नज़र वेख वखाईआ। बूंद स्वांती अमृत धार निझर झिरना देवे बरख, अगनी तत्त कूड़ बुझाईआ। पंच विकारा मिटे कटक, कर्म कांड दा लेखा दए चुकाईआ। आपणा घर वखाए परत, जिस गृह विच्चों होई जुदाईआ। तख्त निवासी नज़री आए उप्पर सचखण्ड दवारे साचे तख्त, जोती जाता नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के नाता जुड़ाए भगत भगवन्त, भाग हिसा दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मेटे चिन्त, ग़म सोग ना कोई सताईआ। घट भीतर सदा बहार रहे बसन्त, गुलशन वेखे बेपवराहीआ। मेल मिलावा होवे धुर दे कन्त, सेज सुहञ्जणी वज्जे वधाईआ। झगढ़ा मुक जाए स्वर्ग जन्नत, बहिश्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। सचखण्ड दवारा मिले इक्को अन्त, अन्तश्करन दा लहणा झोली पाईआ। बोध अगाध जन भगत बणे अगम्मी पंडत, निरअक्खर पढ़ के

अक्खरां दए बणाईआ। नाता तोड़ के जेरज अंडज़, उत्भुज सेतज पल्लू लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत कदे ना बुज्झे शरअ विच्च जंज़ीर, दीन मज़हब जात पात ऊँच नीच वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को मंज़ल चोटी चढ़े अखीर, आखर प्रभ नूं मिल के खुशी मनाईआ। जिथ्थे झगढ़ा रहे ना कोई तकदीर, कर्मां दी करे ना कोई लड़ाईआ। लेखा रहे ना अमीर गरीब, अमरापद इक्को नज़री आईआ। अमृत धारा मिले धुर दा ठंडा सीर, रस अनडिठ्ठा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वडयाईआ।

जन भगत प्रभ दर्शन लोड़े लोच, निझ नैण अक्ख खुल्ह़ाईआ। जिथ्थे बुद्धि दी रहे कोई ना लोच, मन चंचल ना कोई चतराईआ। झगढ़ा रहे ना दीन दुनी लोक, सलोक इक्को सुण के खुशी मनाईआ। सच दवार दी माणे मौज, ग़मी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। परम पुरख दा वेखे चोज, चोला आपणा रंग रंगाईआ। साची भगती दा पूरा होवे जोग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मैं ममता दा रहे ना रोग, हँ ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। आत्म परमात्म होवे धुर संजोग, विछोड़ा दूई वाला चुकाईआ। निरगुण निरगुण दिन्दा रहे दरस अमोघ, सरगुण सरगुण वज्जदी रहे वधाईआ। होवे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। भाग लग्गे साचे कोट, कूड़ कुटम्ब अंदरों दए कढ्ढाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम खुमारी जन भगतां सदा रक्खे मदहोश, मध आपणा जाम पिआईआ। जन भगत कोई ना लोड़े झगढ़ा, झगढ़त वक्त ना कोई गवाईआ। उह मार्ग सोचे अगला, जिस बिध मिले बेपरवाहीआ। लेखा चुक्के सगला, लक्ख चुरासी रहण ना पाईआ। सदा होवे चार मंगला, गीत गोबिन्द अलाईआ। तन माटी ख़ाकी सोहे साढ्ढु तिन्न हत्थ बंगला, बग बप्पड़ा हँस रूप वटाईआ। मनूआं मन रहे ना पगला, जगत वासना ना कोई हलकाईआ। पुरख अबिनाशी लभ्भणा पए ना विच्चों जंगलां, काया मन्दर अंदर मिल के खुशी मनाईआ। सच दवारिउँ पए ना मंगणा, लोक लाज ना कोई जणाईआ। काया माटी चोला पए ना रंगणा, सतिगुर पूरा चरन धूढ़ी टिक्का ख़ाक दए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्से इक्को बन्दना, डण्डावत विच्च सखावत धुर दी झोली पाईआ।

जन भगत इक्को करे बन्दगी, बन्दना विच्च सीस निवाईआ। दूसर रक्खे ना कोई मशंदगी, दर दर भज्जे ना वाहो दाहीआ। मन मनसा कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढु गन्दगी, सुगन्धी हरि का नाम अन्दर टिकाईआ। लोड़ रहे ना सूरज चन्द दी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सर्बंग दी, हरिजन साचे मेल मिलाईआ।

हरिजन हरि भगत भाउ ना जाणे दूजा, दूई विच्च ना कदे आईआ। इक्को नेत्र खोल्ह के तीजा, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। परम पुरख परमात्म नाल पतीजा, पतिपरमेशवर इक्को लए हंढ्ढाईआ। जिस दे प्रेम अंदर तन मन सीझा, अगनी तत्त ना कोई जलाईआ। साचा नाम धुर दा कलमा सुणे हदीसा, हज़रत हज़ूर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम सदा अनडिठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

जन भगत सद मंगे एका मंग, खाहिश जगत ना कोई वधाईआ। पुरख अबिनाशी टुट्टी गंढ्ढु, जोड़नहार तेरी वडयाईआ। चुरासी रहे ना कोई वण्ड, चारे खाणी ना कोई भवाईआ। लेखा चुक्क जाए बत्ती दन्द, अजपा जाप दे समझाईआ। मेरी आत्म ना होए रंड, सुहागण घर विच्च देणा बणाईआ। इक्को तेरा गावां छन्द, साजण अवर ना कोई मनाईआ। सच दवारा धुर दा तेरा जावां लघँ, नौ दवार सके ना कोई अटकाईआ। मनूआं करे ना कोई पखण्ड, भरम विच्च ना कोई भरमाईआ। प्रकाश तक्कां ना सूरज चन्द, इक्को तेरा नूर वेख के आपणा आप परचाईआ। जोधा सूरबीर मरदाना बण के वजा अगम्मा मरदँग, ढोलक छैणा सरवण सुणन कोई ना पाईआ। तेरे प्रेम दा तेरे गृह माणां अनन्द, रसना जेहवा रस ना कोई चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले पा ठंड, अमृत धारा मुख चवाईआ।

जन भगत सदा लोड़े वस्त इक्क, दूजी मंगण कोई ना जाईआ। चार कुण्ट दह दिशा आत्म परमात्म आए दिस, दूजा रूप ना कोई वखाईआ। निहकरमी हो के कर्मां दा लेखा देवे लिख, पूरब लेखा दए बदलाईआ। सति धर्म दी सिख्या दे के बणावे धुर दा सिख, शिश आपणा रंग वटाईआ। करवट दे ना बदले पिठ, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। मानस जन्म लवे जित्त, हार शौह दरया रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद बणनवाला मित, मित्र प्यारा हो के मेल मिलाईआ।

जन भगत लोड़े इक्को मित्र, सज्जण अवर ना कोई बणाईआ। जिस दा रूप सदा बचित्र, रूप रंग रेख ना कोई समझाईआ। जो आपणी धारों आवे निकल, जिस नूं जन्म कोई ना माईआ। उह भगतां लेखा आए लिखण, धुर दा मालक बण के बिना कलम शाहीआ। जुग चौकड़ी दा लहणा आए नजिट्ठण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आए दिसण, लक्ख चुरासी नज़र कोई ना पाईआ।

जन भगत तक्के इक्को बेनज़ीर, नज़र आपणी आप बदलाईआ। जिस दी समझे ना कोई तस्वीर, तसबी माला वाले सारे देण दुहाईआ। जिस दी सभ तों वक्खरी तदबीर, तकदीर सभ दी दए बदलाईआ। जन भगतां पिच्छे घत्तदा रहे वहीर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। जिस तारे सदना सैण कबीर, जुलाहे दित्ती माण वडयाईआ। सो भगतां होए अधीन, धरू प्रहिलाद गिआ समझाईआ। शमस तबरेज किहा आमीन, मनसूर

सूली चढ़ के खुशी मनाईआ। कलिजुग अन्त जन भगतां नूं देवण आए आप यकीन, यके बाद दीगरे सारे लए उठाईआ। उहनां कहे आफ़रीन, जो जगत आफ्त विच्चों प्रभ नूं रहे ध्याईआ। लेखा दोहां दा सांझा रक्खे नर मदीन, नारी पुरुष वंड ना कोई वंडाईआ। दर आए सर्ब करे तसलीम, जो निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किसे नूं पढ़न ना देवे नुक्ता नूंन ... . डण्डे वाली मीम ना कोई पढ़ाईआ। मार्ग पार कराए जो काया मन्दर अंदर महीन, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। घर दाता करनी दा करता मिले करीम, कायम मुकाम आपणा दए जणाईआ। जिथ्थे झगड़ा रहे ना लोक तीन, त्रैगुण माया पोह ना सके राईआ। हिस्सा नहीं कोई मज़हब दीन, जात पात ना कोई जणाईआ। जन भगत इक्को पुरख अबिनाशी वेखण हक़ हसीन, हुसन दा मालक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत दिन्दा रहे तरमीम, तलकीन हुक्म विच्च कराईआ।

जन भगत कदे लभ्भण ना जाए बन, जंगलां विच्च ना फेरा पाईआ। सदा दर्शन मंगे अन्दर तन, काया काअबा खोलू वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बणे साचा जन, जन्म मरन दा लेखा जाए चुकाईआ। नाता जोड़े इक्को श्री भगवन, भाग हिस्सा ओसे दी झोली पाईआ। कूड़ कुड़िआरा भाण्डा देवे भन्न, भरम अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर याद विच्च करदा रहे धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत सुहेला इक्क अकेला जन भगतां बेड़ा देवे बन्नू , जुग जुग आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जगत मेट के वासना ग़म, झगढ़ा मुका फांसी जम, लेखे ला के पवण स्वासी दम, हम साजण बणा के घर साचे दए पहुंचाईआ। (१४ जेठ श सं २ दौलत राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत पूजे कोई ना सिल पत्थर, पाहिन पाउँ ना सीस झुकाईआ। सुख जाणे ना विद्या अक्खर, किताबां दा कुतब ना कदे अखवाईआ। सदा सच प्रेम दे लथ्था रहे सत्थर, आप आपणा आप मिटाईआ। सच दीदार दा अन्दरों निकले ना कदे असर, असल आपणा राह तकाईआ। हरिचरन शरनाई करे बसर, बिस्तरे मरग सेज ना कोई हंढाईआ। विछोड़े दी अन्दर लग्गी रहे दर्द, बिरहों चोट लगाईआ। वैराग दी चलदी रहे करद, कातल कत्ल कूड़ कुड़िआर वखाईआ। मन अन्धेरा रहे ना गर्द, गुबार गोर ना कोई प्रगटाईआ। प्रभ मिल के पूरी करदा रहे सध्धर, सद मनसा जाए गवाईआ। पुरख अबिनाशी मेहर करे नदर, नज़र इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणा भेव खुलाईआ।

जन भगत इष्ट देव स्वामी इक्को तक्के, अक्ख अक्ख ना कोई बदलाईआ। रस्ता मार्ग समझ के हक़े, हिकमत कूड़ छड्डे चतराईआ। मंज़ल चढ़दयां मूल ना थक्के, भज्जे

वाहो दाहीआ। नाते तोड़े कूड़े साक सज्जण सके, साहिब इक्को इक्क मनाईआ। जो सदा रहे सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे होए सहाईआ। पाप अन्दरों कढ़ु दब्बे, पड़दा मोह दए चुकाईआ। घर सुहावणे सदा सद्दे, चरन कँवल दए सरनाईआ। जिथ्थे नाद अगम्मी वज्जे, शब्द धुन शनवाईआ। दीपक जोत जगे, दिवस रैण होवे रुशनाईआ। बिन रसना जेहवा मिलण मज़े, झिरना अमृत दए झिराईआ। राए धर्म ना देवे सजे, जम डण्ड ना देवे सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग चढ़ाईआ।

जन भगत दूजा तक्के ना कोई वसीला, ओट अवर ना कोई रखवाईआ। प्रभ मिलण दा सदा करे हीला, हिरदे हरि हरि आप वसाईआ। मालक लभ्भे इक्को छैल छबीला, जोबनवन्ता बेपरवाहीआ। दो जहान जिस दे अधीना, सिर सके ना कोई उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा नाम रहे चीना, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म होवे परबीना, प्रभू बेऐब नूर खुदाईआ। जिस दा ना कोई मज़हब ना कोई दीना, जातां वाली वंड ना कोई वंडाईआ। मेहर विच्च होए ना कदे कमीना, बखशिश आपणी रहमत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत ठांडा करे सीना, सांतक सति सति कराईआ।

जन भगत कदे ना जाणे मुशकल, औझड़ राह ना कोई तकाईआ। सदा सदा सद रहे खुशदिल, खुशीआं विच्च ढोला प्रभ दा गाईआ। कायर हो के बणे कदे ना बुज़दिल, सूरबीर आपणा नाउँ धराईआ। प्रेम प्यारा हरदिल, अज़ीज़ धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दवारा लए मल्ल, दर घर साचे सोभा पाईआ।

जन भगत सच झूठ कदे ना करे मिलावट, दोए दोए रंग ना रूप बदलाईआ। प्रेम विच्च करे ना कोई बग़ावत, मनुआ मन ना कोई सताईआ। झगढ़े विच्च ना कोई अदावत, द्वैत दूई ना कोई रखवाईआ। मेहर विच्च मुहब्बत करे सखावत, धुर दी वस्त आप वरताईआ। सच दवारे हरिजन रक्खे सांभ अमानत, अमलां दर अमल ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्मे अंदर हुक्म करे बिआनत, खिआनत नेड़ कोई ना आईआ। (१४ जेठ श सं २ सुंदर सिँघ दे घर)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जन भगत आलस निंदरा विच्च कदे ना जावे सौं, गफ्लत रूप ना कोई बदलाईआ। जागरत सोवत एका गाउँदा नाउँ, नाउँ निरँकार इक्क ध्याईआ। बन्दना विच्च मस्तक छुंहदा रहे पाउँ, पारब्रह्म चरन कँवल सरनाईआ। बणाउँदा रहे सुहञ्जणा थाउँ, आत्म सेजा सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां पकड़दा रहे बाहों, लक्ख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। सदा सदा सद करदा रहे नयाउँ, अदल दा मालक आदल इक्क अखवाईआ।

हरिजन बणाउँदा रहे हँस फड़ फड़ काउँ, बुद्धि काग ना कोई रखवाईआ। एथ्थे बणदा रहे पिता माउँ, मालक हो के आपणी गोद उठाईआ। सच प्रीती अन्दर करदा रहे वाहो वाहो, वाह वाह आपणा गुण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले पार करे शौह दरयाउँ, साचे कन्धे आप उठाईआ।

जन भगत कोई ना तक्के ओट, आसरा नज़र कोई ना आईआ। इक्क मुहब्बत विच्च होए मोहत, मालक मिल के खुशी मनाईआ। साढ़े तिन्न करोड़ खुल्हे रक्खे सोत, रोम रोम वज्जदी रहे वधाईआ। भाग लग्गे काया कोट, तन माटी रंग चढ़ाईआ। जलवा तक्के निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुणावे इक्क सलोक, सोहला धुर दा इक्क दृढ़ाईआ।

जन भगत कदे ना होवे विश्वासघाती, दृष्ट आपणी ना कोई बदलाईआ। प्रभ दा दरस मंगे दिवस राती, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। अमृत पीवे बूंद स्वांती, अगनी तृखा जगत बुझाईआ। आपणी निर्मल करे जाती, उजल हो के सोभा पाईआ। इक्को रंग वेखे प्रभाती, सन्धया रूप ना कोई बदलाईआ। मिले मेल कमलापाती, कँवल नैण नैण करे रुशनाईआ। गृह मन्दर अंदर देवे शांती, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा बणे आप साकी, साख्यात अमृत जाम दए प्याईआ। (१४ जेठ श सं २ नंती देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत प्यार बणे ना काया झुग्गा, तन माटी सच सच ना कोई रखवाईआ। अन्दर प्रेम लभ्भे गुज्झा, पुरख अकाल ढूंडे चाईं चाईंआ। जिथ्थे भाओ रहे ना दूजा, दवैश रहे ना राईआ। सहज नेत्र खोल्हे तीजा, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। आपणा मार्ग दस्से सिध्धा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई फिराईआ। सच घराना दस्से निध्धा, दर ठांडे वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आपणे मिलण दी दे के बिधा, बदौलत आपणी दया कमाईआ।

जन भगत कदे प्रेम करे ना काया कण्पड़, कपटी रूप ना कदे बणाईआ। सच दवारे मंज़ल जावे अप्पड़, प्रभ चरन मिले सरनाईआ। बग्गा रहे मूल ना बप्पड़, हँस सरबंस मिले वडयाईआ । नहाउणा पए किसे ना छप्पड़, सच सरोवर इशनान दए कराईआ। दूजा लड़ ना लए पकड़, आत्म परमात्म गंढु पवाईआ। किसे तराज़ू तुले ना तक्कड़, नाम कण्डे वजन वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत किनारा पार कराए रक्कड़, सच दवार इक्क रखवाईआ।

जन भगत काया माटी कदे ना मंगे सुख, सुख आत्म नज़री आईआ । जन्म

जन्म दा मेटे दुःख, कर्म कर्म दा रोग गवाईआ । प्रभ मिलण दी रक्खे भुक्ख, तृष्ना रोग ना कोई वधाईआ। लेखे लावे जामा मानस मनुक्ख, मानव दर घर सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब स्वामी आपणी गोदी लवे चुक्क, चार कुण्ट दा झगढ़ा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्स के इक्क तुक, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रहण ना देवे उहला लुक, गुरमुख पड़दयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

जन भगत काया मन्दर अंदर करे अरदास, सीस जगदीस झुकाईआ। हरि करते वसणा मेरे पास, सदा तेरा राह तकाईआ। मोहे तेरा इक्क विश्वास, विषिआं तों लैणा बचाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश, प्रकाश्त हो के वेखे सर्ब लोकाईआ। मैं बण के तेरा दासी दास, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। मेरी पूरी करनी आस, तृष्ना देणी बुझाईआ। तेरे मन्दर करां वास, तेरे चरन मिले सरनाईआ। मेरी नेत्र खुल्ले जाग, आलस निन्दरा रहे ना राईआ। मानुख जन्म होवे वड वड भाग, हिस्सा तेरी झोली पाईआ। मेरा जगदा रहे चराग, तेरा नूर होए रुशनाईआ। जलवा तक्कां विच्च ब्रह्माद, ब्रह्माण्ड वेख खुशी मनाईआ। तूं रचना रची आदि, जुगादि तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त अमोलक दे दे दाद, दाते दानी देंदिआं तोट रहे ना राईआ। (१४ जेठ श सं २ लॅछमी देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत कदे ना करे खुदी, हँकार विच्च ना आईआ। सदा निर्मल रक्खे बुद्धि, प्रेम प्यार मुहब्बत विच्च समाईआ। मंज़ल तक्के उच्ची, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। सुरती रक्खे सुच्ची, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत करे ना कूड़ विचार, ममता मोह ना कोई रखाईआ।

इक्को प्रभ दा मंगे दरस दीदार, चन्द नूर होए रुशनाईआ। मंज़ल मिले अट्टल मुनार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जिथ्थे सूरज चन्द ना कोई सतार, मण्डल मंडप नज़र कोई ना आईआ। इक्को खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर रिहा कराईआ। जोती जाता हो उजिआर, नूरो नूर नूर डगमगाईआ। जन भगतां पावे सार, महांसारथी हो के आपणे दर पहुंचाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, जम की फांसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत इक्को मंगो धुर दा रंग, रंगत कूड़ ना कोई रखाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोई रखाईआ। शब्द नाद वज्जे मरदँग, धुन आत्मक सुणे चाईं चाईंआ। निजानन्द विच्चों परे होए परमानन्द, परम पुरख विच्च समाईआ। जिथ्थे इक्को ढोला इक्को छन्द, गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंग, बख्शंद हरिजन भगत लए तराईआ।

जन भगत चढ़े मंज़ल महिबूब, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा इक्को अर्श अरूज़, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। हज़रत पढ़े ना कोई हज़ारा दरूद, कलमा नबी ना कोई सुणाईआ। परवरदिगार सांझा यार परम पुरख परमात्म होए मौजूद, अबिनाशी करता नज़री आईआ। जिस दी समझ ना सक्कया कोई हदूद, बेअन्त कह के सारे रहे गाईआ। जन भगतां सदा हाजर मौज़ूद, ओझल हो ना मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत भगवान हो मेहरवान दर ठांडे देवे माण वडयाईआ। (१४ जेठ श सं २ प्रकाश चन्द दे गृह)

* * * * *

जन भगतां अंदर साची रास, मण्डल सोहणा नज़री आईआ। गोपी काहन पैंदी रास, सुरती शब्दी नाच नचाईआ। सच दीपक होए प्रकाश, खाली हत्थ ना कोई उठाईआ। खेल खेले जिस रचना रची आदि, अन्त दा मालक खुशी मनाईआ। जिस मंज़ल नूं खोजदे सन्त साध, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। सो भगतां सहज मिले दाद, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ।

जन भगत कदे ना करे दलिद्र , आलस विच्च कदे ना आईआ। लेखा जाणे पूरब बिदर, बिध सभ नूं गिआ दृढ़ाईआ। निरगुण धारों आउणा निक्कल, पड़दा माया परे हटाईआ। पुरख अबिनाशी मिलणा मित्र, मीत मुरारा खुशी मनाईआ। चोटी चढ़ना सिखर, घर वज्जे इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर टिकाईआ।

जन भगत लेखा जाणे पूरे सतिगुर दा, सति सतिवादी सीस निवाईआ। राह तक्के रस्ता धुर दा, धर्म दी धार नाल वडयाईआ। झगड़ा मुकाए अन्ध घोर दा, अन्ध अन्धेरा ना कोई भरमाईआ। लेखा चुका के पंज चोर दा, चोरी चोरी दाओ ना कोई लगाईआ। लहणा रहे ना मनूए शोर दा, शहनशाह देवे माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपे बौहड़दा, बौहड़ी बौहड़ी करे लुकाईआ।

जन भगत कदे ना बणे जगिआसू, जगत वाली रीत ना कोई बणाईआ। जगत ममता नेत्र नीर वहाए कोई ना आंसू, छहिबर नैण ना कोई वखाईआ। जिस दी धार नूं कट्ट सके ना धातू, खण्डा खड़ग ना कोई छुहाईआ। जगत विद्या समझे कोई ना साधू, साधना विच्च जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सोए आप उठाईआ।

जन भगत सदा सद निरगुण धारों उठे, निरवैर दए वडयाईआ। पुरख अकाल अबिनाशी करता तुट्ठे, मेहरवान होए सहाईआ। हरिजन रहण ना देवे सुत्ते, सोई सुरती

सवाधान आप वखाईआ। भाग लगा के काया बुते, वतन पिछले दए पहुंचाईआ। जिथ्थे पैंडा मंज़ल मुक्के, लेखा रहे ना राईआ। साहिब स्वामी पुच्छे, सतिगुर दया कमाईआ। जन भगत सचखण्ड दवार प्रभ सरनाई पुजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ठांडे दर सदा टिकाईआ। (१५ जेठ श सं २ सरदार चन्द दे गृह)

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

जन भगत देवे हरि नाम खज़ाना, अतोट अतुट आदि जुगादि रखाइंदा। बख्शणहार पद निरबाणा, निरवैर निरँकार निराकार आपणी दया कमाइंदा। महल्ल अट्टल वस्से उच्च मकाना, महिबूब हो के मुहब्बत विच्च समाइंदा। शब्द अगम्मी धुन आत्मक राग सुणाए गाणा, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोई हलाइंदा। नाम खुमारी अन्तर करे मस्ताना, मस्ती विच्च हस्ती आप बदलाइंदा। सुरती शब्दी मेल कराए गोपी काहना, बंसरी धुर दी हक़ सुणाइंदा। एथे ओथे निरगुण सरगुण देवे वड्डिआई दो जहानां, जगत जहालत विच्चों बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए धुर दा घर, जिस गृह आपणा आसण लाइंदा ।

जन भगत एका ओट रक्खे निरँकार, दूजा राह ना कोई तकाईआ । निरगुण नूर जोत दरस करे अपार, पारब्रह्म पतिपरमेशवर इक्को नज़री आईआ। नाता तोड़ कूड़ जगत संसार, वड संसारी मिल के खुशी मनाईआ। जिस दी महिंमा सिफ्त सदा चले जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अंज़ील कुरान खाणी बाणी रागाँ नादां विच्च सुणाईआ। सो भगतां मीता ठांडा सीता दर साचा मिले दरबार, दरगाह साची हक़ मुकाम सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहज सुभाईआ।

जन भगत इक्को मन्ने भगवन्त, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। आत्म परमात्म दा मालक बणा के कन्त, कन्त कन्तूहल साची सेज सुहाईआ। इक्को नाम जपणहारा मणीआं मंत, मन का मणका दए भवाईआ। गढ्ढु तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म इक्को नज़री आईआ। झगढ़ा छड्ड बहिश्त जन्नत, सच दवारा राह तकाईआ। मेल मिलावा होवे निरगुण धार अन्त, जोती जोत विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत सुहेले पड़दा दए उठाईआ।

जन भगत मन्ने इक्क भगवान, निरगुण निरगुण ध्यान लगाईआ। जिथ्थे झुल्ले धर्म निशान, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। नाद शब्द वज्जे धुनकान, अगम्मी राग सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दर ते सीस निवाण, निउँ निउँ लागण पाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां करे परवान, नाम परवाना बिन हत्थां हत्थ फड़ाईआ। साचा बण के धुर दा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ।

जन भगत एका मन्ने आदि निरञ्जण, जोती जोत ध्यान लगाईआ । जो दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पावे अञ्जण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन कँवल धूड़ कराए साचा मज़न, दुरमत मैल धवाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण बणे साचा सज्जण, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा पड़दा पाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया पंज तत्त विकारा पोह ना सके अगन, माया ममता मोह ना कोई सताईआ। मिले मेल सूरा सरबंगण, आत्म परमात्म वज्जदी रहे वधाईआ। भाग लगाए काया माटी साढ़े तिन्न हत्थ बदन, घर विच्च घर मिले वर नरायण नर निरगुण नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

जन भगत इक्को मन्ने अबिनाशी करता, साहिब स्वामी सीस निवाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना मरदा, जन्म विच्च जन्म ना कोई बदलाईआ। जो लक्ख चुरासी मालक घर घर दा, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा रिहा लगाईआ। जो मंज़ल अगम्मी चढ़दा, सच दवारे बह के हुक्म वरताईआ। जो सन्त सुहेले नित्त नवित्त फड़दा, शब्दी डोरी सुरती लए बंधाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्हे आपणे घर दा, गृह मन्दर साचा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पल्लू सदा फड़दा, लोकमात सके ना कोई छुडाईआ।

जन भगत इक्को आसा रक्खे पारब्रह्म, पतिपरमेशवर इक्क ध्याईआ। जो कदे मरे ना जाए जम्म, जम की फासी ना कोई भवाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को धरम, वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। सूफी सन्त फकीरां जन भगतां देवे साची सरन, जो सिध्धा हरि हरि ओट तकाईआ। साची मंज़ल आवे चढ़न, काया पड़दा उहला दए उठाईआ। निरगुण धार निरअक्खर आवे पढ़न, जगत अक्खर वक्खर हुक्म इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ।

जन भगत इक्को मन्ने हरी हरि, हिरदे हरि वसाईआ। चुक्के भरम भाओ डर, भयानक नज़र कोई ना आईआ। सच दवारे जाए खड़, खटका अन्दरों दए कढ़ाईआ। इक्को नज़री आए नरायण नर, नरां दा मालक बेपरवाहीआ। जो शब्दी प्यार अन्दर लए फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। भाग लगाए काया माटी घर, घर विच्च करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मन्दर दए वखाईआ।

जन भगत आपणा मन्दर लए तक्क, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ । जिथ्थे लेखा हकीकत हक़, लाशरीक रिहा चुकाईआ। पुरख अकाल रिहा दस्स, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी होए आस, अबिनाशी करता दए माण वडयाईआ। साची पूंजी मिले रास, वस्त अमोलक नाम झोली पाईआ। मिटे कलिजुग रैण अन्धरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्से आपणी

गाथ, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। मेला मिले पुरख समराथ, समरथ स्वामी अन्तरजामी हरिजन साचे लए जुड़ाईआ। जुग जन्म दिआं विछड़यां पुच्छे वात, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। चरन प्रीती साची नीती धुर दा जोड़े नात, साक सज्जण इक्को इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा साथ, धुर दा संगी संग निभाईआ।

जन भगत इक्को प्रभ दी करे पूजा, सिमरन जोग अभिआस, इक्को नज़री आईआ। अवर ना दिसे दूजा, तीजे लोइण होए रुशनाईआ । कँवल नाभी होए मूधा, झिरना निझर दए झिराईआ। भेव अभेदा खुल्ह़े गुझा, शब्द नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावे साचा दर, धुर दरबारे पड़दा लाहीआ।

जन भगत खुल्ह़े दर दरवाज़ा, बन्द किवाड़ी पड़दा आप उठाईआ। राह तक्के ग़रीब निवाज़ा, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ । जो आदि जुगादि दो जहानां राजन राजा, शाहो भूप सुल्तान नज़री आईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ज़िमीं असमान करनहारा काजा, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। जो लक्ख चुरासी अंदर शब्द अगम्मी अनहद धार वजाए वाजा, पवण स्वास नाल रलाईआ। निरगुण जोत जोती जोत प्रकाशा, असल आपणा रंग रंगाईआ। सच दवारे दे के इक्क भरवासा, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखावे उह घर, जिस घर इक्को नूर नज़री आईआ।

जन भगत तक्के उह मुनार, जिस दी मंज़ल समझ किसे ना आईआ । मार्ग दिसे दुस्वार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस दी सिफ्त महिंमा करदे गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा ढोला गाईआ। जिस दी अद्धविचकारी मंज़ल दस्म दवार, इस तों उप्पर लेखा बेपरवाहीआ। भगत सुहेला जावे खुशीआं नाल, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। सुन अगम्म करे सहजे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग वखाईआ। थिर घर वासी दरस करे दीदार, हरिजन आपणा आप मिटाईआ। सचखण्ड दवारे वेख सच्ची सरकार, सच जगदीश दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , हरिजन मेला एका एकंकार, अकल कलधारी आपणे विच्च समाईआ।

जन भगत नाम खज़ाने दा धुर दा मालक, देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। बख्शणहार साहिब स्वामी ख़ालक, अन्तरजामी बेपरवाहीआ। झोली भराए हरि भगत सुहेले बालक, अन्तर आत्म आप टिकाईआ। जिथ्थे रूप नज़री आए खालस, खालस इक्को इक्क दरसाईआ । मन वासना रहे कोई ना लालस, लालच अवर ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे घर लोकमात विच्चों लै के जाए वापस, जिस घर विच्चों आदि होई जुदाईआ।

मन शांती दी अवस्था नहीं थोड़ी, बहुती तों बहुती नज़री आईआ। जिन्हां गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां साचे सन्तां अबिनाशी करता आपणे शब्द नाल दए जोड़ी, जोड़ी धुर दी लए बणाईआ। ओथ्थे मन करे ना बौहड़ी बौहड़ी, दरोही दरोही ना कोई सुणाईआ। एह वारता नहीं कोई लम्मी चौड़ी, पुरख अकाल आपणे हत्थ रखाईआ। जिध्धर चाहे उधर खिचे डोरी, जगत वासना विच्चों खिच के आपणे प्रेम विच्च टिकाईआ। हुक्मे अंदर जाए तोरी, तुरत आपणा राह बणाईआ। इक्को मन्त्र दस्स के फुरना फोरी, धुर दा फ़िकरा फिकर सारे दए गवाईआ। मन वासना विच्च कदे करे ना चोरी, सतिजुग पूरा अन्दरे अन्दर लए हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

मनुआ जगत जगिआसू जग जगिआस, जग जीवण दाते दिती वडयाईआ। लक्ख चुरासी दा खेल तमाश, मनुआ वेख के खुशी मनाईआ। इन्द्रिआं दे नाल जोड़ के नात वासना दा देवे साथ, कूड़ी क्रिया नाल शब्दी धार मिल जाए सहज हो जाए साफ़, देर लग्गे ना राईआ। थोड़ी बहुती कोई ना सके वाच, वाचक हो के बचन ना कोई सुणाईआ। इक्को सच प्रीती दा बणा दे आपणा नात, नाता इक्को इक्क जणाईआ। थोड़ी तों बहुती होवे ख्वाहिश, खालस इक्को ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा दे के विश्वास, विषिआं तों बाहर कढ्ढाईआ। निर्मल नूर कर प्रकाश, जोत सरूप जोत दी धार विच्च टिकाईआ। जन भगत मन दे पिच्छे कदे ना होवे उदास, चिन्ता ग़म ना कोई रखाईआ। एस नूं निक्की जेही समझ के शाख़, शहनशाह इक्को लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहुती थोड़ी थोड़ी बहुती बहुती मनूए दी मनसा वाली रास, अगम्मता विच्च आपणा आप जणाईआ। (१५ जेठ श सं २ खजान सिँघ दे घर)

⁕ ⁕ ⁕ ⁕ ⁕

जन भगत चढ़े अगम्मी घाटी, साची मंज़ल पन्ध मुकाईआ। आवण जावण रहे ना कोई वाटी, चुरासी गेड़ ना कोई भवाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी मिले कमलापाती, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। नाम भण्डारा देवे साची दाती, दाता दयावान बेपरवाहीआ। दरस वखावे इक्क इकांती, इक्क इकल्ला नज़री आईआ। अमृत बूंद देवे हयाती, हाज़र हो के पड़दा देवे उठाईआ। चरन प्रीती जोड़े साचा नाती, सहारा इक्को इक्क समझाईआ। मानस जन्म जन भगतां पुच्छे वाती, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जिन्हां दी लेखे ला लए इक्क राती, रुत्त विच्चों रुत्त दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वडयाईआ।

हरिजन लेखा चुक्के चारे कूट, हरि भगत वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल होवे मौज़ूद, मेहर नज़र इक्क रखाईआ। किसे नूं पढ़ना पए ना हज़ारा दरूद, इसम आजम इक्क दरसाईआ। मेहरवान हो के रक्खे महिफूज़, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। झगड़ा रहे ना किसे जिन-

न भूत, जन्नत बेख़बर ख़बर उठाईआ। जो साचे हिरदिउँ बण जाण पूत, तिन्ह़ां दुःख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जन भगत जगत दुःख विच्च कदे ना रोवे, हाहाकार ना कोई वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अमृत जल मुखड़ा धोवे, दुरमत मैल धवाईआ। अमृत आत्म बीज साचा बोवे, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गफ्लत विच्च कदे ना सोवे, सुत्यां लए उठाईआ। करे कराए सोई जग होए, करन करावणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लंघाईआ।

जन भगत लवे कदे ना हौका, ग़मी ग़म ना कोई सताईआ। पुरख अबिनाशी चढ़ाए आपणी नौका, नईआ नाम दए समझाईआ। दरस कराए शाह पातशाह सच्चे शाहो का, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। नाता जोड़ के पिता पूत माउँ का, गोद सुहञ्जणी इक्क टिकाईआ। सहारा दे के ठंडी छाउँ का, अगनी तत्त दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

जन भगत कदी ना मारे धाह, नेत्र नैणां नीर ना कोई वहाईआ। जिन्ह़ां मिल गिआ बेपरवाह, बेपरवाही विच्च रखवाईआ। अमृत आत्म जाम देवे पिआ, प्याला मधुर अन्दरों बाहर कढ़ाईआ। साची मंज़ल दस्से राह, रस्ते विच्च ना कोई अटकाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।

जन भगत कदी ना होवे जुदा, वक्खरा रहण कोई ना पाईआ। हक़ प्रीती होवे फिदा, आपणा आप मिटाईआ। मार्ग वेखे धुर दा सिध्धा, सदने वांग रहे ना बणया कसाईआ। साची मिले धुर दरगाह जग्ह़ा, थान भूमिका सोहणी नज़री आईआ। जिथ्थे नाम पदार्थ मिले मज़ा, दूसरा रस ना कोई वखाईआ। पोह ना सके कोई कज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ।

जन भगतां प्रभ दए भरोसा, सिदक सिदक विच्चों उपजाईआ। जन्म जन्म दा रहण ना देवे रोसा, रस्ते साचे देवे लगाईआ। भाग लगाए काया कोठा, पंज तत्त वज्जे इक्क वधाईआ। निर्मल प्रकाश करे जोता, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों मानस जन्म स्वच्छ दे के मौका, मुकम्मल पड़दा दए उठाईआ। अबिनाशी करता दीन दयाल राह दस्स के सौखा, मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भवगान, गुरमुखां नाल कदे करे ना धोखा, धुखदे धूंएं ठंडे ठार बणाईआ। (१५ जेठ श सं २ फरंगी राम दे गृह)

* * * * *

जन भगत कदे ना तक्के दृष्टी चम्म, मन का मोह ना कोई रखवाईआ। झगढ़ा मुका के ख़ुशी ग़म, इक्को रंग विच्च समाईआ। भरम भय ना रहे जन, ममता मोह ना कोई हलकाईआ। नाम भण्डारा मिले धन, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भाग लग्गे काया माटी तन, तपदे हिरदे शांत कराईआ। साचा नाम संदेशा देवे कन्न, सरवण सुणे आप सुणाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, गढ़ हँकार आप तुड़ाईआ। सच प्रकाश चाढ़े चन्न, जलवा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, बन्धन आपणा इक्को पाईआ। (१५ जेठ श सं २ प्रकाशो देवी दे गृह)

जन भगत झगड़ा मुका के संसार कूड़ कुकर्म, कुटलता अन्दरों दए कढ्ढाईआ। सति सच जाणे सच धरम, धीरज जत सति सन्तोख वधाईआ। प्रभू प्रीती जाणे धुर दा कर्म, कांडा दा झगड़ा दए मुकाईआ। निरगुण धार कदे ना करे भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ । झगड़ा रक्खे ना वरन बरन, इक्को रंग तक्के ख़लक ख़ुदाईआ। अबिनाशी करता जाणे साची सरन, सरनगत मालक इक्को नज़री आईआ। भय रक्खे ना कोई मरन, मरन जीवण इक्को रंग समाईआ। साची मंज़ल सिखे चढ़न, सुरत शब्द नाल जुड़ाईआ। धुर दा ढोला जाणे पढ़न, सोहँ साचा सोहला गाईआ। पुरख अबिनाशी पकड़े चरन, चरनोदक पी पी ख़ुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन भेव दए खुल्ह़ाईआ।

जन भगत नाता तोड़े कलिजुग कूड़ कुड़िआर, ममता मोह ना कोई रखवाईआ। जूठ झूठ जड़ देवे उखाड़, अंदरों करे सफ़ाईआ। इक्को वस्त मंगे अपर अपार, प्रभ दर्शन कर के ख़ुशी मनाईआ। शब्द नाद वज्जे धुनकार, अगम्मी राग अलाहीआ। निरगुण जोत होए उजिआर, बिन चन्द सूरज रुशनाईआ। मन्दर सोहे सच दवार, जिस गृह बैठे डेरा लाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, मेहरवान दया कमाईआ। जन भगतां सद पावे सार, सार शब्द नाद सुणाईआ। बणया रहे सदा ग़मखार, ग़मी चिन्ता दूर कराईआ। भव सागर करे पार, भवर विच्च ना कोई भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा तराईआ।

जन भगत कदे ना लोड़े मोह ममता, माया बन्धन कोई ना पाईआ। गढ़ रहे ना हउमें हंगता, हिरदे हरि हरि वसाईआ। दरवेश रूप ना धारे मंगता, घर घर अलख ना कोई जगाईआ। सच दवार ना रहे संगता, लोक लाज ना कोई वडयाईआ। रिवाज छड्डे दीन दुनी जग दा, प्रभ चले हुक्म रजाईआ। अगनी वांग कदे ना मघदा, कूड़ी तपश ना कोई जलाईआ। भेव खुल्ह़े हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म मेला मिले सैहज सुभाईआ। लेखा देवे दर घर साचे जन्म दा, कर्म कर्म नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण बख्श के आपणी सरन दा, सहिँसे सारे दए मिटाईआ।

जन भगत कदे फसे ना विच्च दुनी, बंधन अवर ना कोई रखाईआ। शब्दी दाता बणे गुनी, गहर गम्भीर ढोला गाईआ। लहणा मुका के रिखी मुनी, मुन्न सुन्न तों अग्गे वेखे चाईं चाईंआ। जिथ्थे शब्द नाद ना कोई धुनी, अनहद राग ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पुकार सदा रिहा सुणी, सुण सुण हर घट हर थां हर मन्दर हरि जू हरि हरि होवे आप सहाईआ। (१६ जेठ श सं २ साईं दास दे घर)

* * * * *

जन भगत एका सिमरे हरि का नाम, हरि हिरदे सदा वसाइंदा। दूसर बणे ना किसे गुलाम, चाकर हो ना सेव कमाइंदा । झोली पाए धुर दा दान, वस्त अगम्म आप वरताइंदा। लोकमात वड्डिआई देवे माण, दरगाह साची सचखण्ड दवार सुहाइंदा। जन्म जन्म दा पूरन होवे काम, अगला पिछला पन्ध आप चुकाइंदा। भाग लग्गे काया खेड़े नगर ग्राम, गृह मन्दर सोभा पाइंदा। मंज़ल मंज़ल पौड़े चढ़ना करे आसान, मेहर नज़र नाल पार कराइंदा। गफ्लत विच्च गाफ़ल रहण ना देवे बाल अंञाण, बुद्ध बिबेक साची टेक आप समझाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दस्से सति पहिचाण, पड़दा उहला आप उठाइंदा।

जन भगत दूसर किसे ना झुकाए सिर, सर प्रभ दी भेट कराईआ। अन्तर अन्तर ना जाए फिर, धीरज धीर नाल वडयाईआ। इक्को मालक समझे प्रीतम पिर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस तों विछड़यां होया चिर, अन्तम ओसे विच्च समाईआ। सच फुलवाड़ी विच्चों गुरमुख गुञ्चा फुल्ल जाए खिल, पत टैहणी आप महकाईआ। प्रेम प्यारा बणया रहे हरदिल, हिरदे हरि हरि नाम धिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन साचे वेखव वखाईआ।

जन भगत कूड़ा रक्खे कोई ना डेरा, घर सच्चा इक्क सुहाईआ। जिथ्थे रहे ना अन्ध अन्धेरा, सतिगुर नाम करे रुशनाईआ । वसदा रहे धुर दा खेड़ा, खिड़की कुण्डी आप खुल्ह़ाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, निझ घर बैठा सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को रंग संझ सवेरा, प्रभाती रूप ना कोई बदलाईआ। चुरासी वाला रहे ना गेड़ा, फांसी वाला फंद ना कोई भवाईआ। सदा सदा सद रहे चाओ घनेरा, मन चँचल ना कोई चतराईआ। बुद्धि दा रहे कोई ना झेड़ा, मत मतवाली ना कोई कुरलाईआ। पुरख अकाल करे मेहरा, नज़रे कर्म आप उठाईआ। आपणे रंग रंगाए चेरा, चेरा गुर इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पड़दा दए चुकाईआ।

जन भगत कदे ना होए बेसबर, सबूरी सिदक नाल हंढाईआ । अन्धेरा चुका के काया कबर, काअबा किबल वेखव वखाईआ। धुर दा तक्के सच्चा अदल, इन्साफ़ करे

बेपरवाहीआ। जो ज़िंदगी जीवण देवे बदल, मन का मणका दए उलटाईआ। सच चाढ़े आपणी मज़ल, मंज़ल इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे नाद गावे धुर दी गज़ल, गरज अवर ना कोई रखाईआ। जन भगतां पोह ना सके अज़ल, अजीज आपणे लए उठाईआ। जगत वासना कर के कतल, मकतूल इक्को करे पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा वखा के पिछला वतन, बेवतनां पड़दा आप उठाईआ।

जन भगत सदा लोड़े आपणा घर, दूजे दर ना मंगण जाईआ । जिथ्थे वसे मालक इक्को हरि, हरिजन साचे सदा मिलाईआ। खुल्ला रक्खे धुर दा दर, दरबान अग्गे ना कोई अटकाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले लए फड़, फड़ बाहों आप उठाईआ। निरगुण हो के सरगुण मंज़ल जाए चढ़, पैंडा पन्ध मुकाईआ। शब्दी धार बन्ने लड़, जोरू जर चलण ना देवे चतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत नुहाए धुर दे सर, सरोवर इक्को इक्क वखाईआ।

जन भगत सतिगुर चरन धूढ़ी करे सच्चा नहावण, तीर्थ तट्ट ना कोई वडयाईआ। लेखा जाणे विद्या अक्खरी बावन, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भेव दस्स के गए अकावन, हुक्मे अंदर हुक्म जणाईआ। साहिब सतिगुर मेहरवान अमृत मेघ बरसे सावण, सावल सुंदर दया कमाईआ। दुरमत मैल धोवे पतित पावन, पुनीत गुरमुख लए बणाईआ। दर्दवंद हो के पकड़े दामन, दामनगीर आप अखवाईआ। आत्म दा बणे अन्त जामन, जमा तों लए छुडाईआ । मनुआ मन हँकारी हँकार करे कोई ना रावण, तीर अणयाला इक्को दए चलाईआ। सन्त सुहेले साचा नाम इक्को गावण, गा गा खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी घर साचे दर्शन पावण, नेत्र लोचन नैण अक्ख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जन भगतां आवे आप उठावण, सोया गफ्लत अन्दर रहण कोई ना पाईआ। (१६ जेठ श सं २ प्रेमी देवी दे गृह)

* * * * *

जन भगत किसे दर ना मंगे आबा, अमृत प्रभ दा पी के खुशी मनाईआ। माण रक्खे ना कोई कँवली नाभा, नाभी तों परे सवादा बेपरवाहीआ। सीस झुका के जगत इष्ट ना करे अदाबा, सीस इक्को इक्क निवाईआ। आत्म परमात्म प्यार करे सांझा, साची रीती आप मनाईआ। कलिजुग अन्धेर झक्खड़ ना वेखे झांजा, अडोल अडुल्ल रह के खुशी विच्च समाईआ। अठ्ठे पहर सोहँ ढोला गीत रहे गाँदा, गावत गा गा खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता सभ दा लेखा रहे लांदा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थक्का मांदा, जगत मंज़ल विच्चों पार कराईआ।

हरि भगत कूड़ी करे ना कोई बनावट, ठग्गाँ वाला रूप ना कोई वटाईआ। पुरख

अबिनाशी कोलों मंगे नाम नयामत, वस्त अमोलक झोली डाहीआ। जिस दे नाल रहे सदा सही सलामत, जन्म मरन विच्च कदे ना आईआ। प्रभ दी बणया रहे अमानत, काया माटी अन्दर बह के वक्त लंघाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि जुगादि सदा सद सभ दा जाणत, अणजाणत कहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उजल आप कराईआ।

जन भगत कट्टे जगत ना कोई गुलामी, दरवेश दर ना अलख जगाईआ। कलमा पढ़े ना शरअ कलामी, कायनात ना कोई सुणाईआ। वड्डिआई विच्च ना लए बदनामी, नेकी बदी वंड ना कोई वंडाईआ। ममता मोह विच्च मन ना करे हरामी, कूड़ी क्रिया संग ना कोई रखाईआ। इक्को ध्यान प्रभ चरन करे ध्यानी, ओट इक्को इक्क तकाईआ। जिस दी दरगाह सच निशानी, निशाना आपणा रिहा झुलाईआ। जन भगतां देवणहारा पद निरबाणी, पदमां दे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म रहण ना देवे बेगानी, बेगम धुर दी लए बणाईआ। लेखे लावे बाल बिरध अवस्था जवानी, जोबनवन्ता आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां संग सूरा सर्बंग कदे ना करे बेईमानी, बेवा रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंज़ल आपणी दस्से आसानी, अहिसान सिर ना कोई चढ़ाईआ। (१६ जेठ श सं २ प्रेम सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत सोहे सचखण्ड, जिथ्थे खण्डा खड़ग नज़र कोई ना आईआ। अवतार पैगम्बर वंडे कोई ना वंड, इक्को पारब्रह्म पतिपरमेशवर पुरख अकाल जोत जोत विच्च समाईआ। ना कोई कलमा ढोला गीत सुणावे छन्द, रसना वाली आवाज ना कोई अलाईआ। ना कोई सूर्या दिसे चन्द, मण्डल रूप बदलाईआ। ना कोई भरम भलेखा दूई द्वैती शरअ दी होवे कंध, दीन मज़हब वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई इष्ट देव वक्खरा होवे ढंग, मन्दर मस्जिद शिवदवाला मठ गुरूदवार नज़र कोई ना आईआ। ना जलधारा वहण वहे गंग, समुंद सागर रूप ना कोई बदलाईआ। ना कोई चार कुण्ट दह दिशा मारना पए पन्ध, नौ सत्त भज्जे कोई ना वाहो दाहीआ। ना कोई कागज़ कलम शाही लेखा करे बन्द, बन्द अक्खर वक्खर दए जणाईआ। ना कोई रूप रेख दिसे रंग, निरवैर निराकार निरँकार आपणा खेल रिहा कराईआ। जन भगतां प्रेम प्यार प्रीती देवे आपणा सच अनन्द, अनरस लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे इक्को एक एकँकार आपणा दस्से धरम, धुर दी बाण सभ नूं दए लगाईआ।

जन भगत तक्के सचखण्ड महल्ल, छप्पर छन्न नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे बिन तेल बाती दीपक रिहा बल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शाह पातशाह शहनशाह पुरख अकाल बैठा अट्टल, पदवी आपणी आप बणाईआ। जिथ्थे ना कोई जल ना कोई थल,

समुंद सागर रूप ना कोई वखाईआ। ना कोई कपट ना कोई छल, अछल अछल वेस ना कोई धराईआ। इक्को शहनशाह धाम सोहे निहचल, निहकर्मी आपणा डेरा लाईआ। सच संदेशे आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्दी धार रिहा घल्ल, धुर फ़रमाणा इक्क अलाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत चारे खाणी अन्दर जाए रल, निरगुण हो के सोभा पाईआ। मेहरवान हो के महिबूब जन भगतां होवे वल, वलवले कूड़े अंदरों दए कढ्ढाईआ । साचे नाम दा देवे फल, रस आपणा दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वसावे साचे आपणे घर, जिस घर दा स्वामी इक्को इक्क अखवाईआ।

जन भगत वेखे सच्ची दरगाह, मुकामे हक़ खुशी मनाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म दा अन्त अख़ीरी होए नकाह, तत्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। पवण स्वासी लैणा पए ना साह, चमड़ी हड्ड जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। फिरना पए ना किसे थल अस्गाह, जंगलां विच्च ना कोई भवाईआ। लभ्भणा पए किसे ना राह, चारे कुण्टां भज्जे ना वाहो दाहीआ। किरपा करे बेपरवाह, अबिनाशी करता पड़दा दए उठाईआ । घर सज्जण मिले सहज सभा, गृह बैठा नज़री आईआ । जिस नूं जलवागर कहन्दे खुदा, खुदी तक्ब्बर दए मिटाईआ। आपणा नूर करे रुशना, ज़हूर विच्चों ज़हूर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सदा मेहरवां, मेहरवान हो के आपणे रंग रंगाईआ।

जन भगत कदे ना लोड़े स्वर्ग, नरक बहिस्त जन्नत दोज़ख़ लोड़ रहे ना राईआ। जगत सुख सारे करे तरक, तुरत फ़ैसला इक्क कराईआ। सिध्धी परम पुरख परमात्म नाल मेल के आपणी सुरत नाता सतिगुर शब्द नाल मिलाईआ। दर्शन करे अकाल मूरत, अकल कलधारी वेख वखाईआ। जिस दी समझे कोई ना सूरत, सिफ्तां विच्च सारे गए गाईआ। जिस दा नाद अगम्मी तूरत, तुरीआ पद तों परे करे शनवाईआ। जिस दी आदि करी ना किसे महूरत, अन्त कहण कोई ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी रक्खदे गए जरूरत, उह ज़रूरी भगतां होए सहाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, ममता मोह दए चुकाईआ। चरन प्रीती दे के साची खाक धूढ़त, धुर दा लहणा झोली पाईआ। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, अज्ञान अन्धेर अन्दरों दए कढ्ढाईआ। कर प्रकाश नूर नुराना नूरत, निरगुण आपणे विच्च समाईआ। आसा मनसा जन भगतां सदा होवे पूरत, पूरब लेखा बिन लेखिउँ दए वरताईआ। सर्ब कला बण भरपूरत, भरम भुलेखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर घर साचे देवे माण वडयाईआ।

जन भगत कदे ना करे मिन्नत, बौहड़ी बौहड़ी कर ना कोई कुरलाईआ। सदा जावे परम पुरख दी सिम्मत, जगत समाज सके ना कोई अटकाईआ। अन्तर आत्म कर के हिम्मत, भज्जे वाहो दाहीआ । रोक ना सके कोई निन्दक, निन्दयां विच्च जगत लोकाईआ। मनसा मन रहे ना चिन्तक, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग निभाईआ।

जन भगत कदे ना लोड़े जग तीर्थ पाणी, तीर्थ सरोवर भगत जन बणाईआ। इक्को अबिनाशी करता लभ्भे आपणा हाणी, जो हर घट हर वेले होए सहाईआ। जिस दी बदल ना जाए कदे जवानी, जोबनवन्ता इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल परे़ ज़िमी असमानी, जस्मानी तत्त सभ दे रिहा हंढाईआ। जिस दुनियां रक्खी फानी, पीर पैगम्बर गुर अवतार बच्या रहण कोई ना पाईआ। जो धुर दे कलमे दी कायनात मारे कानी, नाम निधाना तीर चलाईआ। जिस दा दूजा दिसे कोई ना सानी, लासानी इक्को नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी खेले खेल महानी, महांबीर सूरबीर आप उपजाईआ। जो जन भगतां अन्तर बख्शे नूर जोत नुरानी, नर नरायण दया कमाईआ। मंज़ल चढ़ के सच रुहानी, रूह बुत्त दोवें करे सफ़ाईआ । आत्म रहण ना देवे बेगानी, बेगाने घर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म मिल के पावे पद निरबाणी, निरवैर हो के इक्को रंग समाईआ। जन भगतां सच दवारे चढ़ के जलवा तक्के शाह सुल्तानी, शहनशाह इक्को सोभा पाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त भगतां लेखे लौंदा रिहा कुरबानी, जो आपा आप भेट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा बणया रहे बानी, बावन अकावन आपणे विच्च छुपाईआ। (१६ जेठ श सं २ फुमण सिँघ दे गृह)

* * * * *

जन भगत कहे मेरा मालक शाह सुल्तानी, पारब्रह्म पतिपरमेशवर आदि निरञ्जण नूर अलाहीआ। सचखण्ड दवार जिस दी जोत जगे महानी, रंग रूप रेख समझ कोई ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी लोकमात निशानी, जुग चौकड़ी नित्त नवित्त वेस वटाईआ। शब्द नाद बोध अगाध देवे अगम्मी बाणी, धुर संदेशा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक्क जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर बणया रहे दानी, वस्त अमोलक सभ दी झोली पाईआ। भगत सुहेला इक्क इकेला नाम निधाना देवे सच निशानी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप वरताईआ। लेखा जाणे अंडज़ जेरज उत्भुज सेहतज चारे खाणी, चार वरन अठारां बरन करनहार पढ़ाईआ। निरअक्खर अक्खर धार बणाए शास्त्र सिमरत वेद पुरानी, कलम शाही कागज़ बंधन देवे पाईआ । जीव जंत साध सन्त गृह मन्दर काया होवे जाण जाणी, अन्तरजामी खोजे थाउँ थाईंआ। अमृत रस निझर झिरना बूंद स्वांती देवे ठंडा पाणी, त्रैगुण माया पंज तत्त अगनी अग्ग बुझाईआ। सुरत सवाणी सहज सभाउ मेल मिलाए शब्द हाणी, हर घट हिरदे अन्दर बह के खुशी मनाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल निरगुण सरगुण बख्शणहार इक्क ध्यानी, इष्ट देव स्वामी सतिगुर वाहिद नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए सच घर, जिस मन्दर बह के निरगुण जोत करे रुशनाईआ।

जन भगत इक्को दरस मंगे गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़र टिकाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, आख़र पैंडा दए मुकाईआ । बिन रूप तों तक्के उह तस्वीर, जिस

नूं तसव्वर सके ना कोई कराईआ। जिस दी महिंमा सिफ्त करे कबीर, काया काअबा गिआ जणाईआ। सो मालक खालक प्रितपालक मिले दस्तगीर, दयावान दृष्ट इष्ट दए खुल्ह़ाईआ। दूई द्वैती शरअ मज़हब दीन कट्ट जंज़ीर, जाहिर पीर दए मिलाईआ। नाम खण्डा तिक्खी धार सच वखाए शमशीर, कूड़ी क्रिया हउमे हंगता माया ममता मोह दए चुकाईआ। अन्तर आत्म प्रेम रस निझर देवे नीर, नर नरायण अगनी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साची मंज़ल दए चढ़ाईआ।

जन भगत मज़ल चढ़ के वेखे एक, एकँकार ध्यान लगाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी नित्त नवित्त अव्वलड़ा भेख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेस लए वटाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर साध सन्त करन आदेश, बिन सीस जगदीश निउँ निउँ लागण पाईआ। दो जहानां ब्रह्म ज्ञाना देवे सति उपदेश, निरअक्खर विच्चों अक्खर धार प्रगटाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण हो के रहे सदा हमेश, जन्म मरन विच्च कदे ना आईआ। जिस नूं सीस झुकौंदे शंकर गणेश, करोड़ तेतीसा बैठा ध्यान लगाईआ। देवत सुर जिस दा लिखदे लेख, सिफ्तां नाल जगत वडयाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी हर घट वस्से साचे देस, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। धुर दा मालक बण के इक्क नरेश, नारी नर दोवें दए तराईआ। चार वरन अठारां बरन नौं खण्ड सत दीप मानव जाती खेले खेड, खिडारी हो के फेरा पाईआ। जोती जलवा नूरी कर के तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पड़दा देवे उठाईआ। जिन्ह़ां भगतां लोकमात सरगुण धार देवे भेज, निरगुण धार लभ्भे चाईं चाईंआ। आत्म परमात्म माणे साची सेज, सच दवारा एकँकारा आदि निरञ्जण करे रुशनाईआ। साचे सन्तां सति स्वामी अन्तरजामी दूर दुराडा नेरन नेरा हो के लए वेख, सच दवारे बण के पान्धी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहाए साचे घर, जिस घर दा दरवाज़ा नज़र किसे ना आईआ।

जन भगत तक्के इक्को मीत, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जिस दा धुर दा साचा गीत, लोकमात सके ना कोई बदलाईआ। जुग जुग सच्ची दस्से रीत, नीतीवान दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्ने ठोकर ला के ठीक, ठाकर हो के आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के मन्दर मसीत, साढ़े तिन्न हत्थ अन्दर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां नज़रीं आए बैठा अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, राओ रंक इक्को दर बहाईआ। पड़दा रहे ना ऊँच नीच, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नाम देवे समझाईआ। जन भगतां दस्स अगम्मी प्रीत, प्रीतम आपणे विच्च समाईआ। दवारा लंघे बिन कदमां हक़ दहलीज, पदमां विच्चों गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर चार जुग चारे बाणी विच्च करदे गए उडीक, वेद व्यासा लिख लिख दए गवाहीआ। मुहम्मद कर के गिआ तस्दीक, ईसा शहादत इक्क भुगताईआ। नानक गोबिन्द बण के गए रफ़ीक, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सो साहिब अन्तरजामी निरगुण दाता पुरख बिधाता कलिजुग अन्त अन्धेरी रैण मेटे तारीक, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। ग़रीब

निमाणयां कोझयां कमलयां चार वरनां दस्से इक्क प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सैहज सुभाईआ। मेहरवान हो के सति सच करे बख्शीश, रहमत नाल आपणा रैहम कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क तौफीक, मार्ग साचे लए चलाईआ।

जन भगत बिन श्री भगवान करे ना कदे सजदा, बिन परवरदिगार कदमां सीस ना कोई टिकाईआ। दूसर होए ना कदे बरदा, निउँ निउँ ना लागे पाईआ। मालक इक्को लभ्भे पुरख अकाल साचे घर दा, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सभ दा पिता माईआ। जिस दा नाम निधाना दा जहानां चलदा, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द विष्न ब्रह्मा शिव ओम धार आपे बणदा, सोइम आपणी कार कमाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत अंडज़ जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी आपे जणदा, धन्न जणेंदी माता आप अखवाईआ। अन्तकाल तोड़ जम काल जन भगत सहाई लोकमात बणदा, निरगुण हो के सरगुण फेरा पाईआ। साचे तख्त शाहो भूप शाह सुल्तान राज राजान हो के चढ़दा, तख्त निवासी हो के सोभा पाईआ। हक़ मनार उच्च मंज़ल महिबूब हो के खड़दा, पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेशवर आपणा रूप दए दरसाईआ। जन भगत सुहेला इक्क अकेला आत्म परमात्म हो के वरदा, कन्त कन्तूहल हो के आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे घर घर दा, काया मन्दर अंदर पड़दे उहले रहण कोई ना पाईआ।

(१६ जेठ श सं २ बिशन सिँघ दे गृह)